मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

आने वाली नस्लों के दीन की फ़िक्र कीजिए

"अपने बच्चों का और आने वाली नस्लों का पूरा इन्तिज़ाम करें कि वह नस्ल पूरी इस्लाम पर तैयार और अक़ीदे के लिहाज़ से भी, जज़्बात की हैसियत से भी, अपनी सभ्यता व संस्कृति के हिसाब से भी और वैचारिक रूप से भी आने वाली नस्लों का इन्तिज़ाम करें। इसलिए कि यह देश इस लिहाज़ से बड़े ख़तरे में है और बड़ी–बड़ी जगहें जो मरकज़ रही हैं और दीन और इल्मे दीन के चश्मे वहां से बहते थे, बल्कि हिन्दुस्तान से बाहर दूसरे मुल्कों को सैराब करते थे। वहां भी ख़तरे पैदा हो गया है कि मुसलमान की आने वाली नस्ल ख़ुदा न ख़्वास्ता इरतिदाद की शिकार न हो जाए, तहज़ीबी इरतिदाद ही नहीं, सांस्कृतिक इरतिदाद और एक इल्मी इरतिदाद ही नहीं, सामाजिक इरतिदाद बल्कि मज़हबी इरतिदाद का ख़तरा महसूस हो रहा है। "

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह0)

Sept
2021

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

₹10/-

ईमान वालों को चेतावनी

"तो सफ़र से पहले ज़ादे राह की फ़िक्र कर लो और तूफ़ान से पहले कश्ती बना लो, क्योंकि सफ़र नज़दीक है और तूफ़ान के आसार ज़ाहिर हो गए हैं, जिनके पास ज़ादे राह न होगा वह भूखे मरेंगे और जिनके पास कश्ती न होगी वह सैलाब में डूब जाएंगे, जब तुम देखते हो कि आसमान में धूल भरी हो और दिन की रोशनी बदलियों मे छिप गयी तो तुम समझते हो कि बर्क़ व बारां का वक़्त आ गया, फिर तुम्हें क्या हो गया है कि दुनिया की अमन व सलामती का मतला गुबार आलूद हो रहा है, दीने इलाही की रोशनी जुलमत, कुफ़्र व तुग्यान में छिप रही है, मगर तुम यक़ीन नहीं करते कि मौसम बदलने वाला है और तैयार नहीं होते कि इन्सानी बादशाहतों से कट कर खुदा की बादशाहत के मुतीअ हो जाओ, क्या तुम नही चाहते कि खुदा के तख़्ते जलाल की मुनादी फिर बुलन्द हो और और उसकी ज़मीन सिर्फ़ उसी के लिए हो जाए।

आह! हम बहुत सो चुके और ग़फ़लत व सरशारी की इन्तिहा हो चुकी, हमने अपने ख़ालिक़ से हमेशा गुरूर किया, लेकिन मख़लूक़ के सामने कभी भी फ़रोतनी से न शरमाए, हमारा औसाफ़ यह बतलाया गया था कि:

"मोमिनों के साथ निहायत आजिज़ व नर्म मगर काफ़िरों के मुक़ाबले में निहायत मग़रूर व सख़्त।"

पर हमने अपनी तमाम ख़ूबियां गवां दी और दुनिया की मग़ज़ूब क़ौमों की तमाम बुराइयां सीख लीं। हम अपनों के आगे सरकश हो गए और ग़ैरों के सामने ज़िल्लत से झुकने लगे, हमने अपने परवरदिगार के आगे दस्ते सवाल नहीं बढ़ाया, लेकिन बन्दों के दस्तरख़्वान के गिरे हुए टुकड़े चुनने लगे, हमने शंहशाहे अर्ज़ो समा की खुदावन्दी से नाफ़रमानी की, मगर ज़मीन के चन्द जज़ीरों के मालिक को अपना खुदा समझ लिया, हमने पूरे दिन में एक बार भी खुदा का नाम हैबत व ख़ौफ़ के साथ नहीं लेते, पर सैंकड़ों मर्तबा अपने ग़ैर मुस्लिम हाकिमों के तसव्वुर से लरज़ते और कांपते रहते हैं।

इससे पहले की ख़ुदा की बादशाही का दिन नज़दीक आए, क्या बेहतर नहीं कि इसके लिए हम अपने तईं तैयारी कर लें? ताकि जब उसका मुक़द्दस दिन आए तो हम यह कह कर निकाल न दिए जाएं कि तुमने ग़ैरों की हुकूमत के आगे खुदा की हुकूमत को भुला दिया, जाओ कि आज खुदा की बादशाहत में भी तुम बिल्कुल भुला दिए गए हो।"

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०)

(इन्तिख़ाब अल हिलाल: १५–१८)

بسم الله الرحمن الرحيم

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक:९ | सितम्बर २०२१ ई० | वर्ष:१३

संरक्षक

हज़रत मौलाना
सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी
(अध्यक्ष - दारे अरफ़ात)

सम्पादक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

सम्पादकीय मण्डल

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी
अब्दुस्सुबहान नाखुदा नदवी
महमूद हसन हसनी नदवी

सह सम्पादक

मो० नफ़ीस ख़ॉ नदवी

अनुवादक

मोहम्मद सैफ़

मुदक

मो० हसन नदवी

इस अंक में:

मौजूदा हालात में हमारी ज़िम्मेदारियां.....२

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुसलमानों की समस्याएं – संभावनाएं एवं उनका हल.....३

हज़रत मौलाना सैय्यद राबे हसनी नदवी

वर्तमान समय की समस्याएं तथा उनका हल.....७

हज़रत मौलाना सैय्यद वाज़ेह हसनी नदवी (रह०)

अब्दुल्लाह इब्ने सबा.....११

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुसलमानों की आर्थिक समस्याएं – एक विश्लेषण.....१५

जनाब रज़ी अहमद

ज़िन्दगी का हिसाब–किताब.....१८

मुहम्मद अरमुग़ान नदवी

यूरोप पर इस्लामी सभ्यता का प्रभाव.....१९

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

E-Mail: markazulimam@gmail.com | www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी०.229001

प्रति अंक 10रू

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला ख़ॉ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

वार्षिक 100रू०

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

मौजूदा हालात में हमारी ज़िम्मेदारियां

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नद्वी

इस इन्तिशार के दौर में जबकि पूरी दुनिया अफ़रा–तफ़री मची हुई है, सबसे बड़ी ज़रूरत इस्लाम के ज़िन्दगी जीने के तरीक़े को पेश करने की है। अलग–अलग मज़ाहिब और तहज़ीबों के अपने–अपने बनाए हुए निज़ामों का तर्जुबा किया जा चुका। इस वक़्त दुनिया दोराहे पर खड़ी है और लगता है कि वह अपने वजूद का हक़ खो देगी। ज़माना–ए–जाहिलियत आज नये रूप में है, या यूं कहें कि जिहालत पढ़–लिख गयी है। जो जुर्म ज़माना–ए–जाहिलियत में मामूली तरीक़ों पर अंजाम दिये जाते थे आज वह नई टेक्नालाजी के साथ आम हो रहे हैं और उनको एक फ़न बना लिया गया है। इस वक़्त अगर कोई निज़ाम–ए–ज़िन्दगी दुनिया को सही रुख़ दे सकता है और इन्सानियत को बचा सकता है तो वह सिर्फ़ और सिर्फ़ निज़ाम–ए–मुहम्मदी (स0अ0व0) है, जिसकी वुसअत व आफ़ाक़ियत और हक़ीक़त पसंदी का दुनियावालों ने भी एतराफ़ किया है। इसके एतदाल व तवाज़ुन और जामिईयत को पेश करने की ज़रूरत है। अफ़सोस है कि इस भरी–पूरी दुनिया में अपने हाल व क़ाल से इसको पेश करने वाले लोग बहुत कम है। और इसके इज्तिमाई निज़ाम को अगर कोई देखना चाहे तो शायद वही मसल सादिक़ आए जो मौलाना रूम ने लिखी है कि: कोई मर्दे दाना चिराग़ लेकर किसी चीज़ की तलाश में निकले। लोगों ने पूछा आप क्या तलाश करते है?फ़रमाने लगे कि जानवरों की दुनिया में रह–रह कर आजिज़ आ चुका, इन्सान की तलाश में निकला हूं। जवाब मिला कि हुज़ूर आप जिस चीज़ की तलाश में निकले हैं वह असंभव है। वही निज़ाम–ए–अख़लाक़ व मुआशरत जो आज असंभव है इसको अमली तौर पर वजूद में लाने की ज़रूरत है। सीरत की किताबों में जो तर्ज़े ज़िन्दगी किताबों की ज़ीनत है आज उसको दुनिया में फैलाने की ज़रूरत है। दुनिया इस वक़्त जिस कस्मपुर्सी के आलम में है और सारी तरक़्क़ियों के बावजूद इसको ज़िन्दगी का सिरा हाथ नहीं आता उसका इलाज और उसके दर्द का दरमा किताबों के औराक़ में मदफ़ून है। इसको निकालने की और आम करने की ज़रूरत है। यह ज़हर का वह मरहम है जो इन्सानी ज़िन्दगी के लिए नवजीवन का काम दे सकता है और उसकी डूबती हुई कश्ती को पार लगा सकता है।

यह काम ख़ास तौर पर उलमा का, दीने शरीअत के माहिरीन का है। वह मैदाने अमल में आएं और अपनी ज़िन्दगी से वह जौहर दिखलाएं जो दुनिया–ए–इन्सानियत के लिए ख़ज़िर–ए–राह साबित हों।

अफ़सोस सद अफ़सोस यह तबक़ा ख़ास तौर पर उसके वह नवजवान जो ताज़ा–ताज़ा मदारिस से फ़ारिग़ होकर निकले हैं, आज अपनी ज़िम्मेदारी को अदा करने के बजाए बताने काफ़िरी में उलझे हुए हैं या ख़्वाबे ग़फ़लत का शिकार हैं। ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर यही सूरतेहाल रही तो आगे हालात का बिगाड़ वहां पहुंच सकता है कि फिर बात बनाए न बने और पानी सिर से ऊंचा हो जाए। इससे पहले पहले हमें मैदाने अमल में आना है। अख़लाक़ व किरदार के जौहर से दुनिया को नजात का सामान फ़राहम करना है और इन्सानियत की डोलती कश्ती को पार लगाना है।

बहुत फ़िक्र की बात यह है कि बजाए ग़ैरों को रास्ता बताने और उनको सही राह पर लाने के आज मुसलमान ग़ैरों का शिकार हो रहे हैं जो एक–आध वाक़्या सालों–साल में इरतिदाद का पेश आ जाता था, आज वह आम बीमारी की शक्ल अख़्तियार करता चला जा रहा है। इसकी सबसे बड़ी वजह तो क़द्र ना शनासी और नाशुक्री है। ईमान आज सिर्फ़ ज़बान के चटख़ारे की तरह गया है, दिल इसकी हलावत से महरूम होते जा रहे है और यक़ीन दिमाग़ों से निकलता जा रहा है।

कृ (शेष पेज 6 पर)

मुसलमानों की समस्याएं – संभावनाएं एवं उनका हल

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी

दावत का काम मुसलमानों का खुसूसी फ़रीज़ा क़रार दिया गया है और उसको इस्लामी ज़िन्दगी के क़याम और उसकी असर पज़ीरी का ज़रिया बनाया गया है। इसीलिए दावते इस्लामी के अमल को जितनी हिकमत और मुख़्लिसाना जज़्बे से अंजाम दिया गया उसी क़द्र इस्लामी ज़िन्दगी को मक़बूलियत और कामयाबी हासिल हुई। हमको मुसलमानों की तारीख़ में इसकी वाज़ेह मिसालें मिलती हैं। आग़ाज़े इस्लाम के मक्की दौर में जिस अज़ीमत और इख़्लास से यह काम लिया गया उसके लिहाज़ से मुसलमानों को आगे के लिये ताक़त व इज़्ज़त हालिस हुई।

इस्लाम में दावत के काम में जबर और ज़ोरदस्ती से परहेज़ की तलक़ीन की गयी है और नसीहत व तरग़ीब के तरीक़ों को अपनाने पर ज़ोर दिया गया है और उसके साथ ख़ुद दायी की हुस्ने सीरत व इख़लाक़ की अहमियत बतायी गयी है और तारीख़ बताती है कि इस्लाम की मक़बूलियत और असरअंगेज़ी में दायी की सीरत और हुस्ने अख़लाक़ का अमली इज़हार और मुख़ातिब की नफ़सियात का लिहाज़ मुअस्सिरे आमिल रहा है। बाज़ वक़्त किसी एक वाक़्ये से पूरी–पूरी जमाअत राहे हिदायत पा गयी है। तारीख़ में इसके बहुत से वाक़्यात हैं। सुहल हुदैबिया के वक़्त से दो साल तक जो आपस में मुलाक़ात और मेलजोल का मौक़ा हासिल हुआ उसमें ग़ैर मामूली तरीक़े से दावत के काम को कामयाबी मिली। उसकी बड़ी वजह यह हुई कि ग़ैरों को मुसलमानों और उसके दरमियान मुलाक़ात व मामलात के ज़रिये मुसलमानों के अख़लाक़ व हुस्ने सीरत और इन्सानियत नवाज़ी से वाकिफ़ होने का मौक़ा मिला और उनको इस्लाम और मुसलमानों के सिलसिले में जो ग़लत फ़हमियां थीं वह दूर हुईं।

हमारे मुल्क हिन्दुस्तान की सूरतेहाल भी कुछ ऐसी ही है। यहां मुसलमान बड़ी तादाद में ज़रूर हैं लेकिन उनके हम वतन उनके सही इस्लामी किरदार व अख़लाक़ से वाक़िफ़ नहीं हो पाते, जिसकी बड़ी वजहें दो हैं: एक तो यह कि मुसलमानों का बड़ा तबक़ा ख़ुद इस्लामी अख़लाक़ व किरदार को अख़्तियार करने में कोताह नज़र आता है, वह अपनी इस्लामी सीरत व किरदार का पूरी तरह हामिल नहीं देखा जाता। दूसरी वजह यह है कि ग़ैरों के साथ मेल–जोल में मुसलमान उमूमन इसकी कोशिश भी नहीं करते कि ग़ैरों को इस्लामी अख़लाक़ व मामलात से वाक़िफ़ कराएं और उनके ज़हनों में जो ग़लतफ़हमियां और बदगुमानियां हैं वह दूर करें। उनकी यह कोताही ग़ालिबन इसलिए भी है कि अक्सर मुसलमान उम्मते दावत होने के बावजूद उम्मते दावत होने का एहसास नहीं रखते। अगर उनको यह एहसास हो और वो उसके तक़ाज़े को पूरा करें तो उसके बहुत अच्छे नताएज सामने आएं।

अल्लाह तआला ने इस उम्मत की खुसूसियत यह बतायी है कि (और हमने तुमको ऐसी एक जमाअत बना दी है जो एतदाल वाली (और मेयारी सतह) पर है ताकि तुम लोगों पर गवाह और उन पर नज़र रखने वाले हो, और तुम्हारे लिये रसूल स0अ0 गवाह हों) और फ़रमाया कि: (तुम लोग अच्छी जमाअत हो जो लोगों के लिये ज़ाहिर की गयी, तुम नेक कामों को बतलाते हो और बुरी बातों से रोकते हो और अल्लाह तआला पर ईमान लाते हो)

यह उम्मत मोतदिल व मेयारी उम्मत और क़ौमों की गवाह और उन पर नज़र रखने वाली उम्मत है। अपने सामने की क़ौमों पर नज़र रखने और उनकी ग़लतकारियों और गुमराहियों की निशानदेही करने वाली उम्मत है और जब उसको यह मंसब दिया गया तो अब उसका फ़र्ज़ बनता है कि इस मंसब का हक़

अदा करे।

दुनिया के वे देश जहां मुसलमान अकसरियत में हैं और जहां इक़्तिदार उनके हाथों में है वहां इस्लाहे हाल व इस्लाहे फ़िक्र का यह काम ज़्यादातर हुकूमती ज़राए से किया जाता है और इस तरह मुल्क व क़ौम के लोगों को ग़लत व मुज़िर कामों से रोका और उनसे बचाया जाता है और इस्लाह व दावत का काम अवामी पैमाने पर भी अवामी ज़राए से किया जाता है और यह ज़िम्मेदारी दानिशवरों पर आती है, इससे कि तामील होती है। लेकिन वे मुल्क जहां मुसलमान अक़लियत में हों वहां हुकूमती पैमान पर तो यह काम अंजाम नहीं दिया जा सकता लेकिन "अम्र बिल मारूफ़ नही अलिन मुनकिर" का अमल बहरहाल मुल्क के अहले शुऊर तबक़े के ज़िम्मे आता है और इस तरह यानि दूसरों के निगरां और रहनुमा होने का जो मंसब है उसके तक़ाज़ों की तामील की जा सकती है।

हिन्दुस्तान में हमारे सामने यही सूरतेहाल है। हम बहैसियत मुसलमान के यहां के अपने हमवतनों को उन सब बातों से आगाह कर सकते हैं जिनसे यह आगाह नहीं हैं कि यह आलमे रंग व बू तन्हा अल्लाह रब्बुल आलमीन का बनाया हुआ है और वही तन्हा इसको चला रहा है और उसी ने इसमें बसने वालों की हाजत व ज़रूरत का सामान मुहैया किया है लेकिन इस बात की ताकीद की है कि जिन्दगी को इन्सानियत की सालेह क़दरों को अख़्तियार करते हुए गुज़ारा जाये और अपने मालिक व मोहसिन के एहसान को माना और उसका शुक्रगुज़ार हुआ जाये। और वह इस ज़ाते वहदुहु ला शरीक की इबादत और उसके हुक्मों की ताबेदारी के ज़रिये ही हो सकता है। जो वही के ज़रिये नबी स0अ0 के वास्ते से मालूम होते हैं। उम्मते इस्लामिया का यह फ़रीज़ा रखा गया है कि वह इन बातों से वाकिफ़ कराए और ख़राब और बुरे कामों से बचने की तलक़ीन करे। और नेक बातों पर अमल न करने वालों पर नज़र रखे कि क़यामत के रोज़ जब रब्बुल आलमीन के सामने पेशी होगी तो कह सके कि रब्बुल आलमीन हमने कोशिश की, हमने क़ौमों का अमल देखा, और इस तरह वे अपने आस–पास की क़ौमों के बारे में गवाही दे सकेंगे।

और जवाबदेही के इसी अमल के लिये अल्लाह तआला ने क़यामत का दिन रखा है और हिसाब व किताब के अंजाम पा जाने पर दोबारा राहत व तकलीफ़ की तवील तरीन बल्कि न ख़त्म होने वाली ज़िन्दगी रखी है। वह हिसाब–किताब से हासिल होने वाले नतीजे के मुताबिक़ होगी। ग़लतकारों को सज़ा और नेकाकारों को जज़ा मिलेगी।

दावती अमल का एक बहुत बड़ा फ़ायदा यह है कि उसके ज़रिये इन्सानी ज़िन्दगियों में इस्तवारी पैदा होती है। और नेकी व बदी के फ़र्क़ का समझना और उसके तहत अपनी ज़िन्दगियों को इन्सान के आला मन्सब के मुताबिक़ गुज़ारना आसान हो जाता है। इस्लाम ने ज़िन्दगी को अपने परवरदिगार के हुक्म के मुताबिक़ गुज़ारने की अहमियत व ज़रूरत को बताने के लिये बार–बार नबी भेजे और उनको वही के ज़रिये अपने एहकाम बताए और आख़िर में हमारे नबी हज़रत मुहम्मद स0अ0 मबऊस किये गये। उन्होंने जो तालीमात हमको पहुंचायीं वह इन्सानी जिन्दगी के लिये बहुत ही मौज़ूं और कारामद तालीमात हैं। इनमें ज़िन्दगी की सहूलियतों की रियायत भी रखी गयी है और अमन व शांति व आपसी भाइचारे और ख़ैरख़्वाही और हमदर्दी का पैग़ाम भी है। इनमें इन्सानों की सलामती और हुस्ने किरदार को अहम जगह दी गयी है। यह इस्लाम की ऐसी सिफ़त है कि इस पर इसका नाम भी "मुस्लिम" से मुश्तिक़ हुआ। जिसके माने अमन व आशिती के हैं। लिहाज़ा मुसलमानों का फ़र्ज़ बनता है कि वे इस पैग़ामें अमन व ख़ैरपसंदी से दूसरों को वाकिफ़ कराएं और बिना किसी ज़ोर ज़बरदस्ती के लोगों को इसको समझने पर आमादा करें। इसके लिये जैसे माहौल और जैसे हालात से वास्ता और ताल्लुक़ हो उनका लिहाज़ करते हुए दावत का काम अंजाम दें। इसमें इन्सानों की ख़ैरख़्वाही भी है और आलमी सतह पर भाई चारा और ख़ैर पसंदी भी है।

दावत के इस अज़ीम काम के लिये हमको जिन वसाएल की ज़रूरत है, उनमें अख़लाक़ी वसाएल भी हैं और तदबीरी वसाएल भी। तदबीरी वसाएल में मुख़ातिब की ज़बान से वाकिफ़ियत और उनका इस्तेमाल बड़ी

अहमियत रखता है। दावत का काम जिस माहौल में करना है, उस माहौल की मुरव्वजा ज़बान को उसके दिलनशीं उसलूब के साथ अख़्तियारक करते हुए इस्तेमाल करना मुअस्सिर ज़रिया साबित हुआ है। इसके लियेउस ज़बान में महारत पैदा करनी होती है। कुरआन मजीद में इसकी तरफ़ इशारा मिलता है, फ़रमाया गया: (और हमने तमाम (पहले) पैग़म्बरों को (भी) उनही की क़ौम की ज़बान में पैग़म्बर बनाकर भेजा है ताकि उनसे (वज़ाहत के साथ) बयान करें)

और हम जब हिन्दुस्तान में हैं तो यहां के एतबार से हमको काम करना होगा और हमारा यह मुल्क मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों, मुख़्तलिफ़ ज़बानों और मुख़्तलिफ़ मज़हबों का मुल्क है और यह अपने रक़्बे के एतबार से भी बहुत वसीअ है और तबई हालात के लिहाज़ से भी तनव्वो रखता है। और इसी तन्व्वो की वजह से यहां का दस्तूर बनाने वालों ने इसको जम्हूरी और सेक्युलर दस्तूर का मुल्क तय किया। जम्हूरी इसीलिए कि सबको यकसां हुकूक हासिल हों और सेक्युलर इसलिए कि किसी एक मज़हब या तहज़ीब वाले को दूसरे के मज़हब और तहज़ीब के साथ ज़बरदस्ती और ज़्यादती करने का हक़ न हो। उसी की बुनियाद पर यहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और मुख़्तलिफ़ सक़ाफ़तों वाले आपस में मिलजुल कर रहते हैं। और मुल्क की सलामती और वहदत के लिये यही बात ज़रिया बनी हुई है। यहां रवादारी की सिफ़त हर फ़िरक़े और हर गिरोह को अख़्तियार करना मुल्क के बुनियादी मफ़ाद में है। इस बात को मुल्क के हर तबक़े को ख़्वाह वह हुकूमती हो या अवामी हो और हर फ़िरक़े और हर तहज़ीब, हर मज़हब और हरज़बान के लोगों को समझता है और रवादारी को न अख़्तियार करने की सूरत में मुल्क के मुख़तलिफ़ तबक़ात की नवययत शीशे के ऐसे गिलासों की मानिन्द हो सकती है जो आपस में टकरांए। ज़ाहिर है सब गिलास टूटेंगे और बेकार हो जाएंगे।

मुल्क के ज़िम्मेदारों और दानिशवरों को इस बात को अच्छी तरह समझना होगा कि किसी तबक़े का ख़्वाह कितना बाअसर हो दूसरे तबक़े पर जबर किसी तहज़ीब का दूसरों की तहज़ीब पर जबर, किसी ज़बान का दूसरी ज़बान पर जबर, सिवाय आपसी कशमकश और टकराव पैदा करने और कोई अच्छा नतीजा नहीं पैदा कर कसता। इन्सानों को अल्लाह तआला की तरफ़ से जो दानाई और हिकमत की जो सलाहियत मिली है उसको सही इस्तेमाल करने से आपस में क़ुरबत और एक–दूसरे को समझने में आसानी पैदा होती है। और आपस के मेल–जोल अख़्तियार करने से एक दूसरे से फ़ायदा उठाने और फिर अपने तर्जुबे से फ़ायदा उठाने का मौक़ा मिलता है।

और उसके नतीजे में ख़्वाह तहज़ीबें हो या ज़बाने या मज़ाहिब इनके दरमियान एक–दूसरे से फ़ायदा उठाने का मामला चलता है। एक तहज़ीब दूसरी तहज़ीब से एक ज़बान दूसरी ज़बान से हत्ता कि मज़हब के मामले में भी बेहतर और मुफ़ीदतर को मालूम करने में और इस्तिफ़ादा व अख़्ज़ फ़ैज़ करने का फ़ायदा होता है। इस ग़रज़ से दुनिया में डायलाग का भी तर्जुबा किया गया। यह डायलाग यानि आपस में तबादलाए ख़्याल अपनी इफ़ादियत रखता है। इसके ज़रिये इन्सान जुमूद सेनिकलकर वसीअ तर दायरे में आता है और नीचे से उभरकर ऊपर आता है।

उसकी सबसे आला मिसाल हमारे हुज़ूर हज़रत मुहम्मद स0अ0 का तरीक़ेकार था। उनकी रहनुमाई वहीये इलाही के ज़रिये होती थी। आपने जब वहीये इलाही से मिली हुई हिदायतों को अपनी क़ौम के सामने रखा और आपकी क़ौम आपके ख़ानदान ही की थी। उनके सामने बड़े और छोटे का फ़र्क़ व लिहाज़ रखते हुए जब आपने आसमानी रहनुमाई वाली बात रखी तो यह उन लोगों के लिये एक तरह से नयी बात थी। लिहाज़ा उन्होंने सुनने से इनकार किया और कहा कि बस हम जो करते आएं हैं हम उनके अलावा कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं। और जब उनको मुख़ातिब किया गया तो कान में उंगली दे लेते और कहते कि हम नई बात नहीं सुनेंगे। लेकिन आपकी बात ऐसी थी कि जिसमें क़ौम का फ़ायदा और हालात की बेहतरी और मुल्क व क़ौम की तरक़्क़ी थी। जब इसमें से किसी के कान में ठीक से पड़ जाती तो उसका ज़हन बदल जाता। हुज़ूर स0अ0 इख़लाक़ व मुहब्बत और

ख़ैरख़्वाहाना अंदाज़ से वहीये इलाही से हासिल करदह बात उनके सामने रखते रहे। आप उनके न सुनने पर नाराज़ नहीं होते थे। बल्कि हमदर्दाना रवैये के साथ अपने ख़ैरख़्वाहाना ज़ज़्बे का इज़हार करते और क़ौम के लोगों के ग़ुस्से व गर्मी तक को बर्दाश्त कर लेते थे। आपको अल्लाह तआला का हुक्म भी यही था कि तुम उन पर यह ख़ैरख़्वाहाना बात जबरन मुसल्लत न करो। माने तो माने और न माने तो यह अपना ही नुक़सान करते हैं, तुम पर इसकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि तुम ज़बदरस्ती मनवाओ। आपने इस पर अमल किया और इसी को इस्लाम का उसूल बताया कि ख़ैरख़्वाहाना अंदाज़ में अच्छी बातों की तरफ़ बुलाया जाए और मनवाने के लिये मजबूर न किया जाये। मगर इसमें अस्ल उसूल यह है कि ख़ैरख़्वाहाना जज़्बा हो कि ग़लत रुख़ अख़्तियार करने वालों और मुज़िर तौर व तरीक़ अपनाने वालों के ग़लत राहों पर चलने से दिल दुखे कि यह अपने भाई बन्द है और अपना नुकसान कर रहे हैं। और यह जज़्बा हो कि हम किस तरह उनको सही राह पर ले आएं। खुद भी अच्छे तौर व तरीक़ पर कारबन्द हों और दूसरों को भी बेहतर राह अख़्तियार करने के लिये दिल में तड़प पैदा हो। यही वह तड़प है जो ख़ैरख़्वाहाना जज़्बे के साथ दूसरों को अपनी तरफ़ खींचती है। और उसके बेहतरीन नजाएज सामने आते हैं।

मुसलमानों को उम्मते दावत का वस्फ़ अता किया गया है कि वे ख़ैर की तरफ़ बुलाएं और शर अख़्तियार करने से मना करें। इस वस्फ़ का तक़ाज़ा है कि हम दूसरों को सही बात बताएं और ऐसा अंदाज़ अख़्तियार करें कि मुहब्बत और ख़ैरख़्वाहाना जज़्बे के साथ हमारी हमदर्दी सामने आये। इस तरह हमारी बात अपनाइयत के साथ सुनी जा सकती है। और जब हम अच्छी बातों की तरफ़ दावत देते हैं तो यह भी हमारी बात को वज़न देती है। और इसके ज़रिये हम ख़ैर को आम करने वाले और इन्सानियत को सलाह व फ़लाह की तरफ़ ले जाने वाले बनते हैं। यह इस मुल्क में हमारा फ़र्ज़ बनता है क्योंकि यहां मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और ज़बानों के दरमियान हम रहते हैं। और हम उम्मते वहदत हैं तो दावत के इस्लामी उसूलों को अपनाते हुए हम लोगों को शर के रास्ते से हटने और ख़ैर का रास्ता अख़्तियार करने की तरफ़ तवज्जो दिला सकते हैं और यह हमको करना चाहिये। यह इस देश के लिये भी मुफ़ीद है और हमारे वज़न को महसूस कराने वाली बात भी है। और इन्सानियत की सलाह व फ़लाह का भी काम है जिसकी ज़िम्मेदारी बहैसियत एक नेक सीरत और इन्सानित के ख़ैरख़्वाह के हम पर आयद होती है कि हम खुद भी अच्छे इन्सान बने और अपने मालिक रब्बुल आलमीन के हुक्मों पर चलें और दूसरों को भी उसी तरफ़ ध्यान दिलाएं और यह बात हमारे दानिशवरों के तरफ़ से दानिशवरों के साथ और हमारे अवाम की तरफ़ से यहां के अवाम के साथ ख़ैरख़्वाही और दाइयाना रवैया अख़्तियार करने से अंजाम पा सकती है।

(पेज २ का शेष)... बस एक रस्म है जो पूरी की जा रही है, वरना दुनिया के मुनाफ़े की क़ीमत ईमान की क़ीमत से बढ़कर है और जहां कहीं इम्तिहान की घड़ी आती है ईमान का सौदा कर लेना आसान मालूम होने लगा है। हदीस में आता है कि एक दौर ऐसा आएगा कि लोग दीन को टुकड़ों की ख़ातिर बेच देंगे, आज इसी सूरतेहाल का सामना है।

इन हालात में सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी उलमा और अहले फ़िक्र व दर्द की है। इसके लिए हमें घर–घर जाना है, सदा लगानी है, ईमान की हक़ीक़त बतानी है। इस्लाम की तालीमात से रोशनास कराना है और पेश आने वाले ख़तरात से आगाह करना है। अल्लाह का वादा है कि मेहनतें राएगा नहीं जातीं।

"और जो भी हमारे लिए जान खपाएंगे तो हम ज़रूर उनके लिए अपने रास्ते खोल देंगे और यक़ीनन अल्लाह बेहतर काम करने वालों ही के साथ है।" (अनअनकबूतः 69)

अगर हम अब भी न जागे तो आगे खाईयां ही खाईयां हैं और अल्लाह की नुसरत से महरूमी के सिवा कुछ नहीं। अल्लाह तआला नेअमत छीन सकता है और दूसरी क़ौम को उस नेअमत का अहल बना सकता है।

"और अगर तुम फिर जाओगे तो वह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को पैदा कर देगा फिर वह तुम्हारी तरह (निकम्मी) न होगी।" (मुहम्मदः 38)

वर्तमान समय की समस्याएं तथा उनका हल

मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

उम्मत–ए–इस्लामिया आज जिस बुरे दौर से गुज़र रही है, तारीख़ में उसकी मिसाल नहीं मिलती। दुनिया के हर ख़ित्ते में उम्मत–ए–इस्लामिया मुख़्तलिफ़ मसाएल, मुश्किलात, ख़तरात और चैलेंजेस का सामना कर रही है। दूसरे लोग इस्लाम और मुसलमानों को जड़ से उखाड़ फेकने के लिए हर तरह के हथकंडे और तरीक़े अख़्तियार कर रहे हैं। दूसरी तरफ़ दाख़िली इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़, ख़ल्फ़िशार व इन्तिशार, मसलकी टकराव और गिरोही तसादुम ने उम्मते इस्लामिया को खोखला कर दिया है।

मुसलमान आज ज़िन्दगी के हर मैदान में मुश्किलात व ख़तरात के नरगे मे हैं। मुआशरती, तहज़ीबी, तमद्दुनी, लिसानी, सियासी, इक़्तिसादी और अक़ीदा के लिहाज़ से ख़तरात व चुनौतियों का सामना है। दुनिया के हर ख़ित्ते में मुसलमानों पर अरसा हयात तंग किया जा रहा है, ख़्वाह वह अक़्लियत में हों या अक्सरियत में। चीन से लेकर अमरीका तक, बल्कि मश्रिक व मग़रिब में मुसलमान इब्तिला व आज़माइश के दौर से गुज़र रहे हैं। मुसलमानों को दरपेश मौजूदा सूरतेहाल और यह मुश्किलात कोई नई बात नहीं है, बल्कि मुसलमान माज़ी में भी दुनिया के मुख़्तलिफ़ ख़ित्ते में बारहा पुरफ़ितन व पुरआशोब दौर से गुज़र चुके हैं। वह अगर एक ख़ित्ते में आज़माइशों व ख़तरात से गुज़र रहे होते तो दूसरे ख़ित्ते में कुर्सिये इक़्तिदार पर फ़ाइज़ व मुतमकिन होते। चुनान्चे कहा जाता था कि इस्लाम का सूरज अगर दुनिया की एक ख़ित्ते में गुरूब होता है तो दूसरे ख़ित्ते में तुलू हो रहा होता है तीरख़ में इसकी मुतअद्दिद मिसाले हैं:

माज़ी में मुसलमानों की आज़माइश और मुश्किलात अस्करी और फ़ौजी नवियत की थीं। जिनके नताएज व अवाक़िब महदूद हुआ करते थे। इसी के साथ साथ मुसलमानों में इन्क़िलाब व बेदारी के असबाब पैदा हुए लेकिन मुसलमान आज जिन हालात से दो चार हैं वह माज़ी से मुख़्तलिफ़ और जुदागाना हैं, बल्कि मौजूदा हालात साम्राज्यी अहद से अलग हैं। जबकि इससे क़ब्ल सारा आलमे इस्लाम साम्राज्य के क़ब्ज़े मे था।

इस वक़्त इस्लाम के ख़िलाफ़ आलमी साज़िशें भी ज़ोरों पर हैं। इस्लामी तशख़्ख़ुस को मिटाने और ख़त्म करने के लिए फ़िक्री, सियासी, इक़्तिसादी, सक़ाफ़ती, तमद्दुनी और फ़ौजी हर तरह के वसाएल व ज़राए अख़्तियार किये जा रहे हैं। यह आलमी साज़िशें पूरी उम्मते इस्लामिया के लिए ख़तरे का मोजिब हैं। इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ ज़राए इब्लाग़ और नये मुवासलाती निज़ाम के ज़रिये से ज़बरदस्त गुमराहकुन प्रोपगन्डा किया जा रहा है।

यह साज़िशें बयकवक़्त फ़ौजी, सियासी, फ़िक्री और तहज़ीबी यलग़ार की शक्ल में जारी है। तुरफ़ा–ए–तमाशाइया की मुसलमानों के सामने दिफ़ा के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये गये हैं। हत्ता कि अपने को बेगुनाह भी साबित नहीं कर सकते। मुसलमानों को ज़बरदस्त प्रोपगन्डा का सामना है, जिसका वह वसाएल और सलाहियत के बावजूद मुक़ाबला नहीं कर सकते। हालांकि वह हक़ पर हैं और उन पर मीडिया के ज़रिये लगाए जाने वाले तमाम इल्ज़ामात से वह कोसों दूर हैं, लेकिन उनके पास ताक़तवर और मुअस्सिर वसाएले इब्लाग़ नहीं है, जबकि दुश्मन इल्मी और इन्सानी तमाम वसाएल पर क़ाबिज़ है और ख़ुद मुसलमान हुकूमतें उनके ख़िलाफ़ हैं इसलिए कि यह हुकूमतें ख़ौफ़न या तमअन इस्लाम दुश्मन आलमी ताक़तों के ताबेअ हैं।

सबसे ख़तरनाक बात यह है कि मुस्लिम मुल्कों के निसाबे तालीम से इन मौजूआत व मज़ामीन और ऐसे मवाद को निकाला जा रहा है, जिससे तुल्बा में इस्लामी

शुउर व बेदारी और इस्लामी फ़िक्र व रूझान पैदा होता है। इसका मक़सद यह है कि मुसलमानों को इस्लामी एहसास व शुऊर से आरी कर दिया जाए, ताकि वह साज़िशों का औराक़ न कर सकें। पूरी दुनिया में इस्लामी मदारिस और दीनी मकातिब के ख़िलाफ़ मुहिम चलाई जा रही है और इन मदारिस को अहले ख़ैर हज़रात से मिलने वाली इमदाद पर पाबन्दी लगाई जा रही है।

उम्मते इस्लामिया के ख़िलाफ़ आलमी पैमाने पर जो जंग जारी है वह नफ़सियाती और शुउरी जंग है जो ऐसाबी जंग से ज़्यादा ख़तरनाक है बल्कि सर्द जंग से भी ज़्यादा ख़तरनाक है। जो सोवियत यूनियन के ज़माने में मग़्रिबी यूरोप व मश्रिकी यूरोप के दरमियान जारी थी। इस्लाम मुख़ालिफ़ ताक़ते फ़िक्र व फ़न व अदब व लिट्रेचर की राह से इस्लाम को ऐसी शक्ल में पेश करना चाहती हैं जो इनके तसव्वुर और नज़रियों के मुताबिक़ हों। नई तहक़ीक़ात और रिपोर्टों के जायज़े से मालूम होता है कि दुश्मनाने इस्लाम ने इस्लाम और मुसलमानों पर हमला करने के लिए नई पॉलिसी बनाई है। यह पॉलिसी अदब लिट्रेचर, इल्म व फ़न, शेर व शायरी, तंज व मिज़ाज, लताएफ़, चुटकुलों, कार्टूनों, लिबास, घरेलू साज़ व सामान और दीगर तफ़रीही वसाएल के ज़रिये इस्लाम पर हमला करने की है। यह नई पॉलिसी सर्द जंग से भी ज़्यादा ख़तरनाक और जारिहाना है। चंद साल पहले अगस्त 2005 ई0 "यूएस न्यूज़ एंड वर्ल्ड रिपोर्ट" मैग्ज़ीन ने फ़िक्र व ज़हन और डॉलर के उनवान के तहत लिखा था कि अमरीकी इन्तिज़ामिया आलमे इस्लाम पर असरअंदाज़ होने के लिए करोड़ो डॉलर ख़र्च कर रही है और इन ज़राए नश्र व इशाअत, तहक़ीक़ी इदारों और रिसर्च सेन्टरों को सरमाया फ़राहम कर रही है। जो इस्लाम और मुसलमान की तस्वीर मस्ख़ करके पेश करते हैं। इस नई जंग का नाम जनरल डिप्लोमेसी रखा गया है। लिहाज़ा उदबा और फ़नकारों के ज़रिये शाने रिसालत में गुस्ताख़ी और इस्लामी शआएर, इस्लामी मुक़द्दसात और मुसलमानों की तौहीन का सिलसिला जारी है और ऐसे लोगों को सियासी पनाह और माली मदद फ़राहम की जा रही है।

बैरूनी हमले के साथ–साथ मुसलमान दाख़िली तौर पर भी ऐसे वक़्त में बाहिमी इख़्तिलाफ़ात व इन्तिशार का शिकार हैं। जबकि उन्हें इत्तिहाद व इत्तिफ़ाक़ की ज़रूरत है। यह भी दुश्मनों की साज़िश का एक हिस्सा है कि मुसलमानों को बाहम लड़ाकर उनकी ताक़त व क़ूव्वत मुन्तशिर व कमज़ोर कर दी जाए और वह दुश्मनों की साज़िशों और मक्कारियों से ग़ाफ़िल व बेख़बर हैं। आज पाकिस्तान, बंग्लादेश, अफ़ग़ानिस्तान, इराक़, यमन, मिस्र, शाम, लीबिया, त्यूनिस और दूसरे इस्लामी देशों में जो कुछ हो रहा है वह इसका सुबूत है, जहां मुसलमानों को मसलकी बुनियाद पर इक़्तिसादी, तबक़ाती, ख़ानदारी, सियासी और फ़िक्री बुनियाद पर इख़्तिलाफ़ात और कशमकश में उलझाया जा रहा है। मुख़्तलिफ़ ग्रुपों में मसला–ए–तसादुम कराया जा रहा है। ख़ुदकश हमले कराए जा रहे हैं, जिनमें मुसलमानों ही का जानी व माली नुक़सान होता है। ग़ैर मुस्लिम अक़्सरियती मुमालिक में मुसलामनों पर तरह–तरह का दबाव डाला जा रहा है।

ज़राए इब्लाग़ और निसाबी किताबों के ज़रिये मुसलमानों की दिलआज़ारी की जा रही है। मुल्क दुश्मन कहा जा रहा है और इन पर दहशतगर्दी, वतन दुश्मनी और क़दामत परस्ती का इल्ज़ाम लगाया जाता है। दूसरी तरफ़ साम्राज्य मुताद्दिद मुल्कों में मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से अपना असर व रुसूख़ बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

मासियत के मैदान में मुस्लिम मुल्कों के अहले सरवत की दौलत ग़ैर मुल्की ताक़तों के तसरुफ़ में है, इसिलए कि आलमी बैंकों की फ़ंडिंग करने वाले इदारों और सरमायाकारी के मरकज़ो पर उन्हीं ताक़तों का क़ब्ज़ा है। चुनान्चे अहले ख़ैर हज़रात मेहनत और ख़ून पसीने से कमाई हुई अपनी दौलत को अपनी मर्ज़ी से ख़र्च नहीं कर सकते। ग़ैर मुल्की ताक़तें मसारिफ़ मुतअययन करती हैं। हत्ता कि जकात और सदक़ात व ख़ैरात में भी इन्हीं ताक़तों की हिदायात के पाबन्द हैं।

मुसलमान जिन ख़तरात से दोचार हैं उनमें वह फ़िक्री व सक़ाफ़ती यलग़ार भी है जो मौजूदा दौर में इस्लाह पसंद और आज़ादाना ख़्यालात व अफ़कार के हामिल मुस्लिम मुफ़क्करीन, मुहक्किकीन व नाम निहाद दानिशवर कर रहे हैं। माज़ी में यह फ़िक्री व सक़ाफ़ती

यलग़ार यूरोपीय मुफ़क्किरीन व मुश्तश्रिकीन कर रहे थे जिनका दाएरा–ए–असर मालूम व महदूद था, इससे मौजूदा फिक्री व तहज़ीबी यलग़ार ज़्यादा ख़तरनाक है। आज़ादाना ख़्यालात के हामिल मुस्लिम मुफ़क्किरीन भोले–भाले, सीधे–साधे और सादह लौह मुसलमानों को धोखे में डालते हैं और उनके दिलों में इस्लामी तालीमात व एहकाम के ताल्लुक़ से शुकूक व शुब्हात पैदा करते हैं, दीनी हक़ाएक़ व मुसल्लमात को मुसख़्ख़र कर रहे हैं। उनका लिट्रेचर अरबी, फ़ारसी, उर्दू और मुसलमानों में राएज मुख़्तलिफ़ ज़बानों में शाया हो रहा है और बैरूनी ताक़तें और मुस्लिम हुकूमतें उनकी सरपरस्ती कर रही हैं। और इसी तरह वह मुस्लिम हल्क़ों में आम किया जा रहा है। इन्हीं इस्लाम मुख़ालिफ़ ताक़ते ताउने बाहम पहुंचा रही हैं और अब इन्टरनेट अख़बारात व रसाएल और नश्र व इशाअत के जदीद वसाएल ने इनको और आसान कर दिया है।

कहीं अस्करी जंग का सामना है, तो कहीं फिक्री और इल्मी जंग का, कहीं तहज़ीबी व सक़ाफ़ती यलग़ार का सामना है तो कहीं मआशी बोहरान का, कहीं ख़ारिजी ख़तरात का सामना है तो कहीं दाख़िली चैलेंज का, दूसरी तरफ़ जो अफ़राद इन ख़तरात का मुक़ाबला कर सकते हैं वह या तो क़ैद व बन्द का शिकार हैं या हक़ीक़त या सही सूरतेहाल से वाक़िफ़ न होने की बिना पर ख़ामोश हैं। या गोशा नशीनी को तरजीह देते हैं। या वह क़दीम तारीख़ के मसाएल व उमूर में उलझे हुए हैं जिनकी वजह से उनको नये चैलेंज व ख़तरात पर और इन मसाएल पर तवज्जे देने का मौक़ा ही नहीं मिलता जिनपर उम्मते इस्लामिया के वजूद का दारोमदार है। पूरी दुनिया में ख़ास तौर से इस्लामी मुल्कों में ईसाई मिशनरी के मुख़्तलिफ़ तालीमी, सक़ाफ़ती और रिफ़ाही इदारे और नेटवर्क काम कर रहे हैं। ईसाई मिशनरियों की सरगर्मियां उन मुल्कों में शबाब पर हैं जो जंगों से निढाल हो चुके हैं या तबक़ाती कशमकश, मआशी व इक़्तिसादी परेशानियों से दो–चार हैं। बहुत से मोमालिक ऐसे हैं जहां पहले चर्च का वजूद नहीं था, अब वहां ईसाई इबादतगाहें और चर्च क़ायम हो चुके हैं, मिसाल के तौर पर ख़लीजी मुमालिक, मुत्तहिदा अरब इमारात, इराक़, अफ़ग़ानिस्तान और मोरितानिया वह मोमालिक हैं जहां पहले चर्च का वजूद नहीं था लेकिन अब जगह–जगह चर्च नज़र आने लगे हैं और मुसलमान मुल्कों में ईसाई आबादी का तनासुब बढ़ाने के लिए मंसूबा बन्द कोशिशें हो रही हैं। आलमी ताक़तें मुस्लिम मुल्कों में ग़ैर मुस्लिम अक़्लियतों को बग़ावत और अलाहदगी पर उकसा रही हैं। ईसाई मिशनरियों को यूरोपीय मुल्कों का भरपूर ताउन और सरपरस्ती हासिल है। ईसाई मिशनरियों की सरगर्मियां भी एक बड़ा ख़तरा है, उसका मुक़ाबला सिर्फ़ दावते इस्लामी की कोशिशों से किया जा सकता है, उसके लिए शुउर बेदार करने की ज़रूरत है और जदीद वसाएल अख़्तियार करते हुए तालीम व तरबियत और दावत व इस्लाह के काज़ को फ़आल और मुअस्सिर बनाना ज़रूरी है।

तारीख़ में कई बार मुस्लिम इलाक़ो पर क़ब्ज़ा किया गया और फिर कुछ मुद्दत के बाद यह आज़ाद हो गए। इसी तरह इस्लामी तारीख़ में क़त्ल व ग़ारतगरी और तख़रीब के वाक़्यात भी पेश आए और मुसलमानों को ज़ालिम व जाबिर ताक़तों के ज़ुल्म का शिकार होना पड़ा। लेकिन मौजूदा सूरतेहाल इससे मुख़्तलिफ़ है। आज इस्लाम से नफ़रत व अदावत पूरी दुनिया में वबा की तरह फैल गई है कि इस्लाम और मुसलमानों को हर मौक़े पर मुजरिम गरदाना जा रहा है। उनको दहशतगर्द, इन्तिहापसंद, अमनदुश्मन कहा जा रहा है। दुनिया के किसी भी हिस्से में पेश आने वाले दहशतगर्दी के वाक़्ये को आसानी के साथ मुसलमानों से जोड़ दिया जाता है। बेगुनाहों को गिरफ़्तार किया जाता है और उन्हें नाकर्दा जुर्म की सज़ा दी जाती है। ज़राए इब्लाग़ के ज़रिये ऐसी सूरतेहाल पैदा कर दी गई है कि हर जगह मुसलमान मुश्तबा समझा जाता है। लोग उससे ख़ौफ़ व डर महसूस करते हैं। मुसलमानों के ताल्लुक़ से यह सल्बी व मनफ़ी तसव्वुर मीडिया की देन है। जिसने यह प्रोपगन्डा कर रखा है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ इस्लाम ही दहशतगर्दी का सरचश्मा व मन्बा है। यह मौजूदा सूरतेहाल जंग से ज़्यादा ख़तरनाक है।

मौजूदा हालात का मुक़ाबला और इस्लाह के लिए संजीदा मुस्बत और ठोस इक़्दामात की ज़रूरत है। हालिया बर्सों में बाज़ हल्क़ों की तरफ़ से बदगुमानी, ग़लतफ़हमी, ख़ौफ़ व दहशत और शक व शुब्हा के

माहौल को ख़त्म करने के लिए बैनुलमज़ाहिब मुज़ाकिरात का दौर शुरू किया गया है। इस मुहिम का मक़सद मुसलमानों के ताल्लुक़ से जो सलीबी व मनफ़ी राय क़ायम की जारही है उसका इज़ाला बताया गया है। यह एक मुस्बत कोशिश है लेकिन आलमी ताक़तें जानिबदाराना कार्यवारियां कर रहीं हैं बल्कि मौजूदा सुपर पावर की तमाम कार्यवाहियों का हदफ़ इस्लाम और मुसलमान हैं। जबकि दुनिया के मुख़्तलिफ़ खित्तों में जो दहशतगर्द और इन्तिहापंसद तन्ज़ीमें और इदारे फैले हुए हैं उनसे सुपर पावर न सिर्फ़ यह कि सर्फे नज़र करता है बल्कि उनकी सरपरस्ती करता है इसी तरह आलमी मीडिया और जराए नश्र व इशाअत मुसलमानों के ख़िलाफ़ नफ़रत व अदावत पैदा करने वाला लिट्रेचर शाया कर रहे हैं और मुस्लिम दुश्मनी पर मुबनी किताबें और मज़ामीन शाया किये जा रहे हैं। अगर यह मुआनदाना रवैया तर्क नहीं किया गया और इसको रोकने की कोशिश नहीं की गई तो इस सिम्त में बज़ाहिर दिखाई देने वाला उठाया गया कोई क़दम एक सराब साबित होगा।

ज़रूरत इस बात की है कि मुख़्तलिफ़ तहज़ीबों और मज़ाहिब के मानने वालों के दरमियान बाहमी एतमाद और मुफ़ाहमत पैदा करने के लिए कोशिश की जाएं। इस सिलसिले में उदबा, मुफ़क्किरीन, दानिशवर और सहाफ़ी और मीडिया से वाबस्ता अफ़राद अच्छा रोल अदा कर सकते हैं। इसके लिए तामीरी व मुसबत और मुन्सिफ़ाना ज़हनियत के हामिल मीडिया की ज़रूरत है। इस सिलसिले में मुसलमानों की ज़िम्मेदारी और ज़्यादा बढ़ जाती है, क्योंकि वह मुजरिम कहे जा रहे हैं चुनान्चे मुसलमानों को चाहिये कि वह इल्म व फ़न के ज़रिये, मीडिया के ज़रिये और जामेअ मुज़ाकिरात, मुस्बत डायलाग और शख़्सी व इन्फ़िरादी मुलाक़ातों के ज़रिये और ग़लतफ़हमियों को दूर करें और इस्लामी तालीमात की सही तस्वीर पेश करें, इसी के साथ–साथ मुख़ालिफ़ाना, मुआनदाना कार्यवाहियों पर रद्देअमल के इज़हार से गुरेज़ करें और इश्तिआल अंगेज़ी का जवाब इश्तिआल अंगेज़ी से न दें, क्योंकि यह तरीक़ा हालात को मज़ीद अबतर बना देगा, उनको इस्लाम की सही तस्वीर पेश करने और ग़लतफ़हमियों के इज़ाले के लिए इल्मी फ़न्नी, सक़ाफ़ती और इज्तिमाई कोशिशें करनी चाहियें और मुख़ालिफ़ाना हल्क़ों तक रसाई और तफ़हीम के लिए लिये मवाक़ेअ तलाश करने चाहिये।

मौजूदा सूरतेहाल में इस बात की ज़रूरत है कि मुसलमान होशमंदी, दानिशमंदी और सही फ़हम व फ़रासत का सुबूत देते हुए हालात का जायज़ा लें और साज़िशों और ख़तरात से बाख़बर रहें और चैलेंजो और ख़तरात का सामना करने के लिए हिकमते अमली पर मुबनी मुनासिब और सही हिकमते अमली अपनाएं और फ़िक्र व फ़न, ज़बान व अदब, तहज़ीब व सक़ाफ़त और तफ़रीही प्रोग्रामों के रास्तों से जो हमले हो रहे हैं उन्हीं ज़राए से उसका मुक़ाबला किया जाए, क्योंकि यह मुदाफ़अत की हिकमत यही है कि वह हथियार अख़्तियार किया जाए जो दुश्मन अख़्तियार करता हो। फ़रमान इलाही है:

"और उनके लिए ताक़त से और घोड़े पालकर हर मुमकिन तैयारी करो, कि उससे अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों पर धाक बिठा सको और इसके अलावा दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते अल्लाह उनको जानता है और अल्लाह के रास्ते में तुम जो भी ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा–पूरा मिल जाएगा और तुम्हारे साथ कुछ भी नाइंसाफ़ी न होगी और अगर सुलह के लिए वह झुक जाएं तो आप भी उसके लिए झुक जाएं और अल्लाह पर भरोसा रखें, यक़ीनन वह ख़ूब सुनता और ख़ूब जानता है।"

ऊपर आयी हुई आयात की रोशनी में ज़रूरी है कि इस ज़राए वसाएल और इस हिकमते अमली से वाक़फ़ियत पैदा की जाए जो दुश्मन अख़्तियार करता है। मुसलमानों की नाकामी की बड़ी वजह यही है कि वह मौजूदा दौर के ख़तरात और चैलेंज के लिए ऐसे वसाएल अख़्तियार करते हैं जिनका ज़माना ख़त्म हो चुका है और जो आउट आफ डेट हो चुके हैं। जब मुसलमान नये चैलेंज और ख़तरात की हक़ीक़त और नवीयत से वाकिफ़ हो जाएंगे और उसके लिए सही और मुनासिब वसाएल अख़्तियार करेंगे तो कामयाब व कामरान होंगे और तमाम ख़तरात व चैलेंज का मुक़ाबला कर सकेंगे।

अब्दुल्लाह इब्ने सबा

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रफ़्ज़ की तारीख़ बताती है कि यह बाक़ायदा एक खुफ़िया साज़िश का नतीजा था, जिसका शिकार बहुत से सादा लोग हो गए जो ज़्यादा ग़ौर व फ़िक्र की सलाहियत नहीं रखते थे और यह भी एक हक़ीक़त है कि यहूदियों ने इसका जाल बुना था। यहूदियों के साज़िशी मिज़ाज ने पहले दिन से इस्लाम को नुक़सान पहुंचाने की कोशिश की। पैग़म्बरे इस्लाम (स0अ0व0) को शहीद करने के लिए उन्होंने बहुत बार कोशिशें कीं। जिनमें दो बार साज़िश बेनक़ाब होकर सामने आयी। एक वाक़्या चार हिजरी का है, जब रसूलुल्लाह (स0अ0व0) एक ज़रूरत से बनूनज़ीर के महल्ले में तशरीफ़ ले गए, उन्होंने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को एक दीवार के नीचे बैठा दिया और तदबीर यह की कि इब्ने जहाश मलऊन को एक भारी पत्थर के साथ छत पर भेजा ताकि वह उस पत्थर को रसूलुल्लाह (स0अ0व0) पर गिरा दे लेकिन रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को वही के ज़रिये से इस साज़िश की ख़बर दे दी गई और रसूलुल्लाह (स0अ0व0) बाहिफ़ाज़ते इलाही वहां से वापस तशरीफ़ ले आए।

दूसरा वाक़्या यह पेश आया कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) सहाबा–ए–किराम (रज़ि0) के साथ तशरीफ़ फ़रमा थे कि सलाम बिन सलमा की बीवी कुछ भुना हुआ गोश्त लेकर आयी और नोश करने के लिए रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को दिया, उसमें इस ख़बीसा ने ज़हर मिला रखा था। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को उस वक़्त भी बज़रिये वही मालूम हो गया और आपने वह नहीं खाया। एक सहाबी ने इसमें से कुछ खा लिया था तो वह बच न सके। (हदीस व शरीअत की किताबों में यह दोनों वाक़्यात तफ़सील से मौजूद हैं)

यहूदियों को अंदाज़ा हो गया कि वह कामयाब नहीं हो सकते तो उन्होंने रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की वफ़ात के बाद दोबारा कोशिश शुरू की लेकिन सबाते सिद्दीकी और सलाबते फ़ारूक़ी के सामने भी वह न ठह सके और उनकी कोशिश कामयाब न हो सकीं। हज़रत उस्मान (रज़ि0) के दौर में जबकि ममलकते इस्लामिया के हुदूद वसीअतर हो चुके थे और हर तरह के लोग दीन में दाख़िल हो रहे थे। इनको अपने काम का मौक़ा मिला। इनको ख़ूब अंदाज़ा हो गया था कि बाहर से रहकर वह कोई बड़ा काम नहीं कर सकेंगे, इसके लिए इन्होंने वही जाल फेंका जो उन्होंने ईसाईयत पर फेंका था। जिस तरह सेंट पॉल जो दर हक़ीक़त यहूदियों का एजेन्ट था, उसने ज़ाहिरी तौर पर ईसाई बनकर ईसाईयत को नेख़ व बन्द से उखाड़ फेंका, इसी तरह यहूदियों ने अपने एक नुमाइन्दे को तैयार किया जो अय्यार ज़हन रखने वाला और शातिराना मिज़ाज का हामिल था। अब्दुल्लाह इब्ने सबा नामी इस यहूदी एजेन्ट ने ज़ाहिरी तौर पर इस्लाम क़ुबूल कर लिया। इसने सबसे पहले अहम इलाक़ों का दौरा करके लोगों के मिज़ाज और हालात से वाक़िफ़ियत हासिल की, उसके बाद इसने दो मसलों में उम्मत को उलझाने की कोशिश की। एक शोशा इसने यह छोड़ा कि अल्लाह ने यह दीन ग़लबे के लिए भेजा है और रसूलुल्लाह (स0अ0व0) इससे पहले दुनिया से तशरीफ़ ले गए। अल्लाह तआला रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के ज़रिये से ही इस दीन को ग़ालिब करेंगे, इसलिए आप दोबारा तशरीफ़ लाएगें। यह अक़ीदा उसने फैलाने की कोशिश की लेकिन वह इसमें ज़्यादा कामयाब न हो सका। मुख़्तलिफ़ इलाक़ों का दौरा करके उसको अंदाज़ा हो गया था कि लोगों को आम तौर पर अहले बैत से बड़ा ताल्लुक़ है, उस वक़्त उनके सरख़ेल सैय्यदना हज़रत अली (रज़ि0) मौजूद थे जिनको शर्फ़े दामादी के साथ चचा ज़ाद भाई होने का शर्फ़ हासिल था, सबसे पहले इस्लाम लाने वालों में थे। जान व तन से इस्लाम के लिए हाज़िर थे। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ही के परवरदा थे। इसलिए आम तौर पर लोगों को उनसे मुहब्बत थी। इब्ने सबा ने अंदाज़ा कर लिया था कि अगर उनके बारे में कोई ऐसी बात पेश की गई जिसमें उनके अफ़ज़ल व अव्वल होने का तज़किरा

हो तो लोगों को क़ुबूल करने में कुछ ज़्यादा तरद्दुद न होगा और एक बड़ी जमाअत इसको अपना लेगी। इस तरह मुसलमानों में एक ऐसा रख़्ना पड़ जाएगा जिसका दूर करना आसान काम न होगा। "रुजअत" के अक़ीदे को फैलाने में नाकामी के बाद उसने अक़ीदा "वसीयत" की तब्लीग़ शुरु की और आम लोगों के सामने यह बात रखी की रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने हज़रत अली को अपना जांनशीन बना लिया था लेकिन लोगों ने उनको ख़लीफ़ा नहीं बनने दिया और हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) से बैत ले ली गयी।

इब्ने सबा यहूदी के साथ यहूदियों की एक पूरी जमाअत थी, जिसने इस्लाम का लबादा ओढ़ रखा था और ज़ाहिरी तौर पर वह अपनेआप को पूरी तरह से मुसलमान ही ज़ाहिर करते थे। इब्ने सबा की इस फ़िक्र को लेकर वह लोग मुख़्तलिफ़ इलाक़े में फैल गए। बहुत से सीधे सादे मुसलमान इस साज़िश को न समझ सके और वह उनका शिकार हो गए और एक बड़ी तादाद उन मुनाफ़िक़ीन की भी थी जो इस्लाम से अदावत रखते थे लेकिन मुसलमानों से फ़ायदा उठाने के लिए उन्होंने दीन क़ुबूल कर लिया था। इनको भी अदावत निकालने का मौक़ा हाथ आया। वह लोग भी पूरी तरह इसी दावत व फ़िक्र के नक़ीब बन गए। इस तरह इस यहूदी साज़िश ने बाल व पर निकालने शुरू कर दिए।

अब्दुल्लाह इब्ने सबा यमन का रहने वाला था। यहूदी मज़हब का था। हज़रत उस्मान (रज़ि0) के ज़माने से उसने इस्लाम का लबादा ओढ़ा और सबसे पहले हिजाज़ का दौरा किया, फिर कूफ़ा व बसरा होता हुआ शाम आया। हर जगह उसकी कोशिश यह थी कि कोई ऐसी गुमराही हाथ आ जाए जिसको हवा दी जा सके और उसके ज़रिये से मुसलमानों में तफ़रीक़ पैदा की जाए। लेकिन कहीं उसकी दाल न गल सकी। आख़िर में मिस्र में उसने डेरा जमाया और वहां पहले उसने अक़ीदे रुजअत को फैलाना चाहा और सादा लोगों को यह कहकर इस पर आमादा किया कि हमारे नबी हज़रत ईसा से कम हैं?जब ईसा नुज़ूल फ़रमाएंगे तो हमारे नबी तो इसके ज़्यादा हक़दार हैं। कुछ लोग इसकी साज़िश का शिकार हो गए। लेकिन उसका मक़सद हासिल न हो सका इसलिए उसने अकीदे वसीयत को पेश किया यहां तक कि उसने एक जमाअत तैयार कर दी जो हज़रत उस्मान (रज़ि0) की ख़िलाफ़त को ग़लत क़रार देती थी। और उसने यह कोशिश शुरू कर दी कि इनको ख़िलाफ़त से दस्तबरदार कर दिया जाए और हज़रत अली को ख़लीफ़ा बनाया जाए। उन हज़रात को भी इसकी इत्तेलाआत पहुंची लेकिन सिरा हाथ न आता था। उसने यह तहरीक ऐसी तल्बीस के साथ शुरू की थी कि वह और उसकी जमाअत ज़ाहिरी तौर पर इसकी गिरफ़्त में न आ सके।

इस पूरी तहरीक के पीछे यहूदी लाबी काम कर रही थी, उसका मक़सद यह था कि इस्लाम को मिटा दिया जाए, इमाम शैबी (रह0) से नक़ल है कि यहूदी अब्दुल्लाह इब्ने सबा की कोशिश यह थी कि इस्लाम को जड़ से उखाड़ कर फेंक दिया जाए और उसकी इस तरह तहरीफ़ कर दी जाए जैसी तहरीफ़ सेंट पॉल यहूदी ने ईसाईयत की की थी।

ज़ाहिर है कि अल्लाह तआला ने इस आख़िरी दीन को क़यामत तक के लिए जारी फ़रमाया है और इसकी हिफ़ाज़त का वादा खुद अल्लाह ने किया है, इसलिए यह दीन तो न मिट सकता था न मिटा लेकिन इस साज़िश के नतीजे में ख़िलाफ़ते इस्लामिया की मुस्तहकम इमारत में दरार ज़रूर पड़ गई जो फिर कभी भी पूरी तरह न भरी जा सकी।

इब्ने सबा और उसकी जमाअत को अदावत सिर्फ़ हज़रत उस्मान (रज़ि0) से न थी बल्कि वह तो मुसलमानों को तोड़कर उनके शीराज़ा को बिखेरना चाहते थे इसलिए उसके नुमाइन्दों ने हर शहर से कुछ तैयार कर दिये थे जिन्होंने अपने तौर पर ख़िलाफ़त की मुस्तहक अफ़राद के नाम पेश किए और हज़रत उस्मान के दस्त बरदार होने की मांग की। बसरा वालों ने हज़रत जुबैर (रज़ि0) का नाम लिया, कूफ़ा वाले हज़रत अली (रज़ि0) को ख़लीफ़ा बनाना चाहते थे और मिस्र तो इब्ने सबा का मरकज़ था, वहां से उसने हज़रत अली (रज़ि0) का नाम पेश किया। अलग–अलग नज़रियात इसलिए सामने लाए गए थे ताकि मुसलमानों में इन्तिशार को ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ावा दिया जा सके और उन बड़े–बड़े सहाबा के नाम इसलिए लिए गए ताकि आम लोगों को मुत्वज्जे किया जा सके। इब्ने सबा ने जो ऐलान किया उसका तर्जुमा नीचे दिया गया है:

"ख़िलाफ़त नाहक़ उस्मान के सुपुर्द की गई, जबकि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के वसीअ हमारे बीच मौजूद हैं। इस मसले को हल करने के लिए उठ खड़े हो और तमाम

वालियान को मतऊन करके उनकी इताअत तर्क कर दो। एहकामे कुरआन को मज़बूती से पकड़ लो और उसके ज़रिये से ग़लबा हासिल करो। इसके अवामिर व नवाही को सामने रखो ताकि उम्मत का एतमाद उनको हासिल हो और उसकी रज़ामंदी तुम्हे मिल सके।'' (अलइस्लाम व बनू इस्राईलः 193)

कुरआन मजीद को उनवान बनाकर उस शख़्स ने अपने कारिन्दो के ज़रिये जो जगह–जगह फैल चुके थे एक इन्तिशार की फ़िज़ा पैदा कर दी। अक्सर लोग इस यहूदी साज़िश को न समझ सके। इस इन्तिशार की कुछ तफ़सीलात इमाम तिबरी, इमाम इब्ने असीर और इमाम इब्ने कसीर ने नक़ल की है। तफ़सील मालूम करने के लिए मज़कूरा बाला कुतुब देखी जा सकती है।

यह लोग ज़ाहिरी तौर पर पक्के मुसलमान नज़र आते थे, यही वजह थी कि आम लोग यह अंदाज़ा न कर सके कि इसके पीछे क्या मक़सद कार फ़रमा हैं?यह सबकुछ वह हज़रत अली (रज़ि0) के नाम पर कर रहे थे। जब उनका एक वफ़्द हज़रत अली (रज़ि0) के पास पहुंचा तो उन्होंने उनको सख़्त मलामत की और अपने पास से निकाल दिया, मगर वह उसके बावजूद अपना काम करते रहे। दूसरी तरफ़ बहुत से लोगों को यह गुमान हुआ कि यह सबकुछ हज़रत अली (रज़ि0) के ईमा पर हो रहा है। हज़रत अली (रज़ि0) जो खुद हज़रत उस्मान (रज़ि0) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और उन लोगों से अपनी बराअत ज़ाहिर की और ख़तरात से आगाह किया, हज़रत अली (रज़ि0) जब वापस होने लगे तो बाज़ लोगों ने उनसे सख़्त कलामी की और यहां तक कहा कि यह सबकुछ आपकी वजह से हो रहा है और अगर आप अपने मक़सद में कामयाब हो गए तो एक दिन भी चैन से न बैठ सकेंगे, हज़रत अली (रज़ि0) को इसका बहुत सदमा पहुंचा।

तफ़सीलात से बज़ाहिर यह अंदाज़ा होता है कि यही यहूदी एजेन्ट एक तरफ़ हज़रत अली (रज़ि0) को वसीअ बताकर हज़रत उस्मान (रज़ि0) को हटाने के दरपे थे और दूसरी तरफ़ हज़रत उस्मान (रज़ि0) के लोगों को जाकर भड़काते थे कि यह सारा इन्तिशार हज़रत अली (रज़ि0) की वजह से है। बहुत से सादा लोग भी इस साज़िश का शिकार हो रहे थे और माहौल बिगड़ता चला जा रहा था।

इमाम शैबी (रह0) उन मुमताज़ इमामों में से हैं जिनकी निगाहे बसीरत ने इस ख़तरे को पूरी तरह से भांप लिया था, मुसलमानों को चेताते हुए वह एक जगह फ़रमाते हैं: ''अहले ज़लाल और रवाफ़िज़ से होशियार रहने की ज़रूरत है, उनमें रवाफ़िज़ सबसे ज़्यादा गुमराह हैं और उनका शर सबसे ज़्यादा बढ़ा हुआ है। यह वह यहूदी हैं जो न तो अपनी चाहत से इस्लाम लाए हैं और न ही ज़ोर ज़बरदस्ती से मुसलमान हुए हैं, बल्कि उन्होंने दीन का लबादा ओढ़ लिया है ताकि मुसलमानों में इन्तिशार पैदा करें और उनमें शर व फ़साद का बीज बोएं। उन्होंने हज़रत अली (रज़ि0) की उलूहियत का दावा इसलिए नहीं किया कि वह उसको सही समझते हैं बल्कि इसके ज़रिये से वह मुसलमानों में फ़ित्नों के दरवाज़े खोलना चाहते हैं, इसलिए कि यह क़ाएदह है कि जो भी नारा दे, कुछ लोग तो उसके पीछे हो ही जाते हैं। हज़रत अली (रज़ि0) ने उनका जिलावतन कर दिया। उसी वक़्त यह बात सामने आ गयी कि वह और यहूदी दोनों एक ही मक़सद रखते हैं।'' (मिन्हाजुस्सुन्नह ला बिन तैमियाः 1/8)

यहूदी प्रोटोकाल में यह बात लिखी हुई है कि क़ाबिले एहतराम शख़्सियात को मुत्हम करके उन पर से उम्मत के एतमाद को ख़त्म कर दो, यह यहूदियों का एक हरबा है जो उन्होंने हर दौर में इस्तेमाल किया, यहूदी एजेन्ट इब्ने सबा ने इसी हरबे को इस्तेमाल करते हुए अपने कारिन्दों को सर्कुलर जारी किया था जिसका तज़किरा ऊपर की लाइनों में हो चुका है। इसका बुनियादी नुक़्ता यही था कि वलियों व अमीरों पर से उम्मत का एतमाद ख़त्म कर दिया जाए। लाज़िमी तौर पर इसके नतीजे में इन्तिशार की फ़िज़ा पैदा होनी थी, इसके अलावा जो दूसरा क़दम उसने उठाया, वह उससे ज़्यादा सख़्त था, हज़राते सहाबा (रज़ि0) जो पूरी उम्मत के पेशवा और सबसे ज़्यादा क़ाबिले एतमाद हैं उनको मतऊन करने का उसने बेड़ा उठाया। इसका मक़सद यह था कि उम्मत का एतमाद उन पर से ख़त्म हो जाए और लोगों के ज़हनों में (मआज़ अल्लाह) उनकी ख़यानत, बदअहदी और वादाख़िलाफ़ी की ऐसी तस्वीर आ जाए कि उनका कोई इज़्ज़त व एहतराम बाक़ी न रह जाए, चूंकि यही हज़रात अव्वलीन हामिलीने दीन हैं, जब उन्हीं पर से एतमाद ख़त्म होगा तो दीन को बिगाड़ना और उसकी बिल्कुल नई शक्ल बना देना कुछ ज़्यादा

मुश्किल न होगा। इमाम शैबी (रह0) ने रवाफ़िज़ की इसी अन्दरूनी ख़बासत की वजह से फ़रमाया था कि:

"उनकी एक सिफ़त तो ऐसी है कि यहूद व नसारा उनसे बेहतर हैं, यहूदियों से सवाल हुआ कि तुम्हारी उम्मत के बेहतरीन अफ़राद कौन हैं?उन्होंने कहा कि असहाबे मूसा, ईसाईयों से जब यही सवाल किया गया तो उन्होंने असहाबे ईसा का तज़किरा किया और जब रवाफ़िज़ से पूछा गया कि सबसे बदतरीन लोग कौन हैं तो उन्होंने असहाबे मुहम्मद (स0अ0व0) का नाम लिया।" (मिन्हाजुस्सुन्नहः 11)

ज़ाहिरी तौर पर सहाबा को मतऊन किया गया मगर पर्दे के पीछ रसूलुल्लाह (स0अ0व0) और दीने इस्लाम पर तअन था और यही उन यहूदियों का बुनियादी मक़सद था कि जिस तरह ईसाईयत को ख़त्म किया गया इसी तरह इस्लाम को भी मिटा दिया जाए।

अल्लाह तआला ने यह दीन क़यामत तक के लिए चुन लिया है और इसकी हिफ़ाज़त का वादा ख़ुद ही फ़रमाया है। इसलिए यह दीन इसी तरह बाक़ी है जिस तरह इसको नबी करीम (स0अ0व0) ने पेश किया था और क़यामत तक यह बाकी रहेगा, वरना वाक़्या यह है कि यहूदियों ने इसको ख़त्म करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। ख़ास तौर पर इब्ने सबा के ज़रिये यहूदियों ने जो जाल फेंका था इसका ख़तरा पैदा हो गया था कि यह दीन भी इसी तरह शिकार न हो जाए जिस तरह ईसाईयत इसका शिकार हुई थी, लेकिन अल्लाह तआला ने इसकी हिफ़ाज़त के लिए सहाबा किराम और ताबईन सहाबा की ऐसी जमाअत खड़ी कर दी जिसने अपनी सारी सलाहियतें उसकी हिफ़ाज़त व इशाअत के लिए ख़र्च कर दीं। फिर भी उन साज़िशों के नतीजे में एक गिरोह ऐसा ज़रूर पैदा हो गया जो गुमराही फैलाता रहा और उसने अहले बैत का नाम लेकर एक तरफ़ सहाबा को मतऊन किया और दूसरी तरफ़ ख़ुद अहले बैत की ग़लत तस्वीर पेश की कि बहुत से लोग अहले बैत के सिलसिले में बदगुमानी में मुब्तिला हो गए, उसी वक़्त से लेकर आज तक जब–जब उनको मौक़ा मिला उन्होंने दीन को बिगाड़ने की कोशिश की और मुसलमानों में इन्तिशार पैदा करने के मौक़े तलाश किये, यही वजह है कि अपने–अपने ज़मानों में तमाम अहले बैत किराम ने उनसे अपनी बराअत ज़ाहिर की और दूसरे हज़रात अइम्मा से उन रवाफ़िज़ के बारे में सख़्त से सख़्त कलिमात तारीख़ मे मौजूद हैं, इमाम बाक़र फ़रमाया करते थेः "मुझे मालूम है कि इराक़ के कुछ लोगों को हमसे मुहब्बत का दावा है, वह हज़रात शेख़ैन की शान में गुस्ताख़ियां करते हैं और कहते हैं कि यह सबकुछ हमारे कहने पर करते हैं, उनको बता दिया जाए कि मैं उनसे बरी हूं और ख़ुदा की पनाह चाहता हूं। फिर फ़रमायाः उस ज़ाते पाक की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, अगर मैं हाकिम होता तो उनको क़त्ल करके अल्लाह का कुर्ब हासिल करता, अगर मैं हज़रात शेख़ैन के लिए दुआ न करूं तो मुझ रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की शफ़ाअत नसीब न हो।" (अलबिदाया वन्निहायाः 9/323)

इमाम इब्ने तैमिया फ़रमाते हैंः यह बात हम तस्लीम नहीं करते कि इस फ़िरक़े ने अपना मज़हब अहले बैत से लिया है, उनमें से किसी फ़िरक़े का अहले बैत से कोई ताल्लुक़ नहीं, बल्कि यह तो हज़रत अली (रज़ि0) और दूसरे अहले बैत के मुख़ालिफ़ हैं, उनके बारे में उसूल व अक़ाएद जुदागाना हैं और उनका उन हज़रात से कोई जोड़ नहीं।" (मिन्हाजुस्सुन्नहः 2/143)

यहूदियों ने इब्ने सबा के ज़रिये से इस्लाम पर जो वार किया था उससे एक तरफ़ रवाफ़िज़ और शियों के गिरोह पैदा हुए, जिनके दसियों फ़िरक़े वजूद में आए और मुसलमानों में इन्तिशार व इफ़्तिराक़ का एक ऐसा दरवाज़ा खुल गया जो शायद ही बन्द हो सके और दूसरी तरफ़ उसके रद्दे अमल में कुछ ऐसे लोग भी पैदा हो गए जो हज़रात अहले बैत को मतऊन करते थे और नासिबियों की एक जमाअत वजूद में आ गई, इस तरह यहूदी अपने मक़सद में दोनों तरफ़ से कामयाब हो गए, लेकिन चूंकि यह दीन क़यामत तक के लिए है, इसलिए अहले हक़ हमेशा से हैं और हर ज़माने में रहे हैं और क़यामत तक रहेंगे, यह वह मोअतदिन फ़िक्र और रासेखुल अमल रखने वालों की जमाअत हैं जो हर तरह के ज़ेग़ व ज़लाल और ग़ुलू से पाक है, इसी के बारे में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः "जिस पर मैं चला और मेरे सहाबा चले।" हर होशमंद दिमाग़ और दर्दमंद दिल रखने वालों की ज़िम्मेदारी है कि वह अग़्यार का आलाकार न बने, बल्कि उसकी सलाहियतें दीन के लिए ख़र्च हों।

मुसलमानों की आर्थिक समस्याएं
एक विश्लेषण

जनाब रज़ी अहमद

स्वतन्त्र भारत में जब मुसलमानों ने रात के ख़ुमार के बाद सरगेरानी से हल्के होकर आंखें खोलीं तो उन्होंने ज़मीन और आसमानको बदला हुआ पाया। चारों ओर ऐसा भयानक अंधेरा छाया हुआ था कि उन्हें राह तो क्या दिखती, हाथ भी न सुझाई दे रहा था। ऐसे अंधेरे में दोस्त–दुश्मन की पहचान मिट गई थी। उस समय बंटवारे के परिणाम से एहदबरां होना मुसलमानों के लिए कुछ आसान नहीं रह गया था ख़ासकर ऐसी स्थिति में जब अपने बेगाने हो गये थे और जिन्हें वह कल तक ग़ैर समझते थे, वह खुलकर ग़ैरपन पर उतर आये थे।

यदि हम बंटवारे के तुरन्त बाद के समय का ठंडे दिमाग़ से अध्ययन करें तो पता चलेगा कि उन दिनों मुसलमानों को भारतीय क़ौम का एक ऐसा अपाहिज अंग समझकर नज़रअंदाज़ किया जा रहा था, जिसे जड़ से काटकर फेंकना आसान नहीं होता तथा उसे बाक़ी रखने से कोई फ़ायदा भी नज़र नहीं आता। लेकिन समय हर घाव को भर देता है तथा समस्याएं धीरे–धीरे स्वयं दर्द की दवा बन जाती हैं। मुसलमान एक दहाई तक हद से ज़्यादा कठिन परिस्थतियों तथा बेचैनी की हालत में रहा तथा फिर धीरे–धीरे सुकून का जीवन व्यतीत करने लगा। लेकिन सदियों में शोषित का जीवन यापन करने वाले भाईयों (बिरादरे वतन) के दिलों में मौजूद बदले की चिंगारी अभी बुझी नहीं है, वह कचोके लगाती रहती है। यही कारण है कि देश की स्वतन्त्रता के 65 साल बाद भी सरकारी विभागों में मुसलमानों का प्रतिनिधित्व अत्यधिक कम है। बिरादरे वतन का ख़ासकर उच्च वर्ग आज भी मुसलमानों को पक्षपात तथा नफ़रत की निगाह ही से देखता है। भला हो वोट की गंदी राजनीति का कि आटे में नमक के बराबर ही सही मुसलमान सरकारी नौकरियों में नज़र आते हैं।

वास्तव में किसी देश में मुसलमानों की राजनीतिक तथा आर्थिक शक्ति का पतन इतिहास में कोई नई बात नहीं है। पतन के ऐसे अत्यधिक उदाहरण है, लेकिन भारत में मुस्लिम शासन के समापन का मूल कारण इस वास्तविकता में छिपा है तथा इस्लामी इतिहास में शायद इसका कोई उदाहरण भी न मिल सकेगा कि 1857ई0 के बाद मुसलमान अपने पिछले शोषितों को न केवल अपने बराबर बल्कि अपना मुक़ाबला करने वाले की हैसियत से स्वीकार करने पर मजबूर थे। अंग्रेज़ों के आने के बाद रोज़गार के अवसर की जो भी सीमित संभावनाएं थी, उनमें उन्हें अपनी अस्तित्व के लिए हिन्दुओं के साथ–साथ संघर्ष करना था। लेकिन नए समय 1857ई0 की ग़दर के बाद पश्चिमी तथा दक्षिणी भारत में तो हिन्दुओं और मुसलमानों ने आम तौर पर नए ज़माने के चैलेंजो का एक ही सा जवाब दिया था, मगर उत्तरी भारत में हिन्दुओं तथा मुसलमानों के तर्ज़ेअमल में बहुत अन्तर था। हिन्दुओं ने बंगाल में कोई 40 साल पहले पश्चिमी शिक्षा की ओर ध्यान देना शुरू कर दिया था। मुसलमान सामूहिक रूप से हुकूमत तथा पश्चिमी शिक्षा व सभ्यता से दूर थे, इसलिए उनका अंदाज़ सरासर विरोधी था। उलमा अंग्रेज़ी शिक्षा की प्राप्ति तथा अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त लोगों का सख़्ती से न केवल विरोध करते थे बल्कि सरकार की ओर से किये जाने वाले सुधार के हर क़दम को संदेह की नज़रों से देखते थे। उन धार्मिक उलमा ने नवीन पश्चिमी विचारों के ख़िलाफ़ फ़ायदे व नुक़सान का आंकलन किये बग़ैर एक प्रकार के युद्ध की तलक़ीन शुरू कर दी जो फ़तेह के नाम पर फ़तेह के नाम पर हज़ीमत के सिवा कुछ न था। इन हालात में मुसलमान शिक्षा हेतु केवल दीनी मदरसों में क़िलाबन्द होकर बैठ गए और उनके पिछड़ेपन का गढ़ा और गहरा होता चला गया। हालांकि कई बुद्धिजीवियों तथा मार्गदर्शकों ने यह साबित करने के लिए ऐड़ी–चोटी का ज़ोर लगा दिया कि इस्लाम ने बदलते हालात के साथ

हमेशा हमआहंगी पैदा की है और यही लचक इस्लाम की हमागीरी और आफ़ाक़ियत का मज़हर है। साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि किस तरह शुरूआती दौर में मुसलमानों ने लिबास, तर्ज़े तालीम, नज़्म व नस्क़, डाक, सरहदों की तक़सीम, तिब, फ़लसफ़ा, अदब व फुनून लतीफ़ा, इल्मे नुजूम, इल्मुल हिसाब वग़ैरह में यूनान, ईरान, रोम व हिन्द वग़ैरह से बहुत कुछ हासिल किया है। लेकिन इन सब बातों का कोई ख़ातिरख़्वाह असर उलमा ने नहीं लिया, नतीजे के तौर पर इन सब अवामिल का असर मुसलमानों की तालीमी ज़िन्दगी पर पड़ा। अंग्रेज़ी और अंग्रेज़ी उलूम से गुरेज़ व इज्तिनाब का तो यह आलम था कि "किसी घर में अगर रद्दी में भी किसी अंग्रेज़ी ज़बान की किताब के कुछ पन्ने पड़े मिल गए तो उन्हें चिमटे से उठाकर बाहर फेंका गया और घर के उस हिस्से को अच्छी तरह धोकर पाक किया गया।" (हिन्दुस्तान की दीनी दर्सगाहें: 43)

इस सख़्तगीरी का नतीजा यह हुआ कि मुसलमानों के लिए मुल्की ओहदों और मन्सबों की राहें महदूद हो गईं। इस पर तरफ़ा तमाशा यह हुआ कि शुमारी हिन्द ख़ासकर बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी हुकूमत ने मुसलमान उमरा और जागीरदारों जो अपनी जाएदादों की मालगुज़ारी वसूल करने का ठेका हिन्दू मुस्ताजिरों को दिया करते थे, बेदख़ल करके बराहरास्त उन हिन्दु मुस्ताजिरों से मामला रखा और 1793 ई के दवामी बन्दोबस्त के ज़रिये उन लोगों को मोरूसी ज़मीनदार बना दिया। इस तरह मुसलमान उमरा का पूरा तबक़ा ही ख़त्म कर दिया गया। इस तरह हुकूमत मुसलमानों को सरकारी मुलाज़मतों से अलग करके धीरे–धीरे बंगाली हिन्दुओं को उनकी जगहें दे रही थी, और इसमें उन्हें इस वजह से भी आसानी हुई कि मुसलमान आम तौर पर अंग्रेज़ी जो तीस साल पहले सरकारी ज़बान बन चुकी थी नहीं पढ़ते थे, अब तक उन्हें रिआयत के तौर पर नौकरी मिल जाती थी, अब यह रिआयत ख़त्म कर दी गईऔर मुसलमानों पर बहैसियते मजमूई सरकारी मुलाज़मतों के दरवाज़े बन्द कर दिये गये। अंग्रेज़ों के इसी इम्तियाज़ी रवैये को हिन्दुओं ने बिलउमूम सराहा, लेकिन जब मुख़्तलिफ़ असबाब के पेशे नज़र हुकूमत ने अपनी इस पॉलिसी पर नज़रेसानी की और मुसलमानों के साथ मुसालहती हिकतमे अमली अख़्तियार की तो हिन्दुओं के एक तबक़े ने इस बात कोपसंद नहीं किया और उनके अख़बारों ने "क़ाबिले तसख़ीर को मुसख़्ख़र करने की ग़ैर आक़िलाना कोशिश पर लम्बे–चौड़े मज़ामीन शाया किए।" (हिन्दू–मुस्लिम कल्चरल आर्काइज़, सैयद मुहम्मद, मुम्बई 1949) मसलन 1857 में कलकत्ता से निकलने वाले एक अख़बार हिन्दू पैट्रिएट ने हुकूमत से इस बात की अपील की कि "वह मुस्लिम नवाज़ पॉलिसी से बाज़ आए क्योंकि तमाम मुसलमान ग़द्दार और देश के दुश्मन थे।"

इस जायज़े से बहरहाल एक बुनियादी और वाज़ेह नुक़्ता यह सामने आता है कि सरकारी मुलाज़मतों में मुसलमानों को नज़रअंदाज़ करने का यह सिलसिला कोई नया नहीं है। यह एक ज़हनियत बन चुकी थी जिसे ख़ासकर बिरादराने वतन का आला तबक़ा आज भी अपने पुरखोंकी इस रिवायत और साज़िशी हिकमते अमली पर पूरी तरह कारबन्द है। सबूत के तौर पर आज की सेक्यूलर और नाम निहाद जम्हूरी हुकूमत में सरकारी मुलाज़मतों में मुसलमानों की सूरते हाल का रिकार्ड देखें और अंदाज़ा लगाएं जिन हुकूमतों की कुर्सियों को मुसलमानों ने सहारा दे रखा है, उन हुकूमतों ने बदले में क्या दिया है।

सच्चर कमेटी की रिपोर्ट के अनुसार सरकारी नौकरियों में मुसलमानों का अनुपात 4.9 प्रतिशत है, जबकि कुल मुलाज़िमीन की तादाद 88,44,669 है।

इस सूरतेहाल का एक अफ़सोसनाक पहलू यह भी है कि मुसलमानों की इस नागुफ़ता बिहि हालत का अंदाज़ा ख़ुद हुकूमत को भी है जिसका वह जा बजा इक़रार भी करती है मगर उसके मदावा की जानिब तो क़दम बढ़ाना दूर की बात ख़ुद रौज़गार पैदा करके ज़िन्दगी गुज़ार रहे नवजवानों को झूठे और बेबुनियाद आरोप लगाकर जेलों में बन्द कर रही है।

मुसलमानों की पसमान्दगी और मुसिलम नवजवानों की बेरोज़गारी के ज़िम्मेदार बहुत हद तक मस्जिद व मकतब के कम इल्म वाइज़ीन भी है। यह लोग माद्दी दौलत और राहत का जो सबक़ मुसलमानों को पढ़ाते हैं वह भी ग़लत है और इस्लामी नुक़्ता–ए–नज़र की ग़लत ताबीर पर मुबनी है। यह हज़रात इफ़लास की तारीफ़ में ज़मीन और आसमान के क़ुलाबे मिलाते हैं और बुज़ुर्गाने दीन की ज़िनदगी के मिसालें पेश करके यह साबित

करते हैं कि नादारी ख़ुदा की रहमत है, मगर इस बात को नज़रअंदाज़ कर देते हैं कि जबरी इफ़लास और इख़्तियारी इफ़लास में फ़र्क़ है। जबरी इफ़लास समाज की नालाएक़ी या बेइन्साफ़ी की अलामत है और इस पर क़नाअत करना और दूसरों को क़नाअत करने की तलक़ीन करना मज़हबी और अख़लाक़ी जुर्म है। मज़हब और अख़लाक़त्र दोनों की तरफ़ से हम पर यह फ़र्ज़ आयद होता है कि हम इस इफ़लास के ख़िलाफ़ और उनके हालात के ख़िलाफ़ जो उसके पैदा करने के ज़िम्मेदार हैं, बग़ावत करें और उनका ख़ात्मा करने की हर मुमकिन कोशिश करें।

अब रही बात इख़्तियारी इफ़लास की तो इसकी दो क़िस्में हैं, एक वह जिसका मुहरिक काहिली और बेहिसी है। दूसरा जिसका मुहरिक ज़हद व ईसार है। ज़ाहिर है ऐसी नादारी जो काहिली और बेहिसी का नतीजा है क़ाबिले शर्म है। वह शख़्स जिसे मेहनत से जी चुराने की आदत है और वह जो मौक़ा मिलने पर भी नहीं कमाता, एक ख़तरनाक अख़लाक़ी मर्ज़ में मुब्तिला है। जिससे और तरह–तरह के रोग पैदा होते हैं। इनमें से ज़्यादातर अमीरों और नेताओं के तुफ़ैली या गदागरी और अगर इत्तिफ़ाक़ से कुछ मनचले हुए तो जराएम की दुनिया में चले जाते हैं, अलबत्ता वह फ़क़ीराना ज़िन्दगी जो ख़ुदा केख़ास बन्दे ज़ुहर व ईसार की नियत से अख़्तियार करते हैं, तारीफ़ व अक़ीदत व एहतिराम के मुस्तहिक़ हैं और उसकी तक़लीद हर सच्चे मुसलमान का नस्बुल ऐन होना चाहिये।

हम मुसलमानों का बहुत बड़ा अलमिया यह है कि हम अपना इमाम और ज़ाकिर उसे तस्लीम कर लेते हैं, जो इस्लाम की अलिफ़ से भी पूरी तरह वाक़िफ़ नहीं होता, चे जाए कि क़ुरआन और हदीस और इस्लामी मआश व मशीयत के उसूलों से वाक़िफ़ हो। हमारा अक्सर इमाम और ख़तीब जो समाज में बेदारी पैदा करने और अवाम को तर्ज़े ज़िन्दगी और ज़रूरियाते ज़िन्दगी का दर्स देने के लिए रूह की हैसियत रखते थे और वहीं मामूली पढ़े–लिखे और महज़ पंज वक़्ता नमाज़ों के क़ाएद बन कर रह गए हैं। नतीजा यह है कि हमारे अक्सर वाइज़ीन कस्बे मआश के वसाएल हासिल करने के लिए या उनकी वुसअत पैदा करने के लिए सई व मेहनत की ज़रूरत पेश आए तो उसे तलबे दुनिया कह कर रद्द कर देते हैं, लेकिन अगर बिना हाथ पांव हिलाए कहीं से पैसामिल जाए तो उसे ख़ुदा की देन समझकर ख़ुशी से क़ुबूल कर लेते हैं। मुसलमानों की पस्ती और बेरोज़गारीका बाइस बड़ी हद तक इफ़लास या क़नाअत का यह रूझान भी है।

बेरोज़गारी की एक बुनियादी वजह यह है कि टेक्निकल तालीम से जिसके लिए ज़्यादा मेहनत की ज़रूरत है, मुसलमान नवजवान घबराते हैं। मुसलमानों का वह तबक़ा जिनमें पुश्तों से तालीम ही नहीं है, यह उम्मीद लगाना कि वह अपने बच्चों को पहले आम तालीम फिर टेक्निकल तालीम दिलाएंगे, फ़िज़ूल है और पढ़े–लिखे मुलाज़िम पेशा ख़ानदानों के लोग हर चन्द कि वह निचले तबक़े से ताल्लुक़ रखते हैं, आम तौर पर हाथ के काम को कसरे शान समझते हैं, इसलिए अपनी औलाद को टेक्निकल तालीम नहीं दिलाना चाहते, चाहे आगे चलकर बेरोज़गारी और गदागरी की मंज़िलें तय करनी पड़े। हालांकि इस रूझान में कुछ तब्दीली आई है और तालीम याफ़्ता तबक़े ने टेक्निकल तालीम की तरफ़ थोड़ी बहुत तवज्जो शुरू की है, लेकिन इसके लिए सख़्त मुक़ाबला करना पड़ता है, जिससे मुसलमान नवजवान घबराते हैं।

इससे भी कहीं सख़्त रुकावट टेक्निकल तालीम बल्कि हर तरह की तालीम की राह में यह है कि मध्यम वर्ग के मुसलमान शदीद माली परेशानियों में मुब्तिला हैं और अपनी औलाद को आला बल्कि बाज़ सूरतों में इब्तिदाई तालीम दिलाने की भी इस्तेताअत नहीं रखते। मुसलमानों की पसमान्दगी दूर करके उन्हें आम मुल्की धारे से जोड़ने के लिए हुकूमत की जानिब से कई मन्सूबे और स्कीमें चलाई जा रही हैं। मुस्लिम बच्चों की तालीम के लिए हुकूमत व वज़ाएफ़ और माली तआउन देने का दम भरती है, मगर उन्हें जारी करने के लिए ऐसी–ऐसी शर्तें लगाती है कि मुसलमानों के उन तबक़ो तक हुकूमत के फ़ंड की बू भी नहीं पहुंचती, ऐसी सूरत में मुस्लिम नवजवानों की बेरोज़गारी में इज़ाफ़ा ही मुमकिन है।

इस सूरतेहाल से निपटने के लिए ज़रूरी है कि मुसलमानों में जो लोग फ़िक्र व अमल की सलाहियत रखते हैं वह मुसमम इरादा कर लें कि एक मुद्दत तक अपनी सारी तवज्जे और कोशिश तालीमी इस्लाहव तरक़्क़ी पर ख़र्च करेंगे।

ज़िन्दगी का हिसाब-किताब

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

अम्बिया (अलैहिस्सलाम) की इम्तियाज़ी शान यह है कि वह दिल के सुधार पर ध्यान देते हैं। इनके नज़दीक ईजादों व अविश्कारों और ज़ाहिरी तामीर व तरक्की से ज़्यादा अहम तामीर–ए–इन्सानियत का काम है। उनकी शिक्षा का बुनियादी केन्द्र खुदा की मुहब्बत और जज़्बा–ए–ईमानी से भरा हुआ होना है। यही वजह है कि वह ज़ाहिरी उतार–चढ़ाव में नहीं उलझते और न ही उसको हासिल करने में अपनी जान नहीं खपाते हैं बल्कि अन्दरूनी तरक़्क़ी के लिए हर वक़्त फ़िक्रमन्द रहते हैं। वह दौलत के अंबार नहीं लगाते बल्कि सब्र की तालीम देते हैं। वह ऐश–इशरत को ज़िन्दगी का मक़सद नहीं समझते बल्कि हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल इबाद (अल्लाह तथा बन्दों का हक़) के निभाने को इन्सानियत की मेराज जानते हैं और ज़ेबाइश व आराइश की तालीम नहीं दिलाते बल्कि सब्र व तक़वा की बात करते हैं, यही वजह है कि इनकी ज़िन्दगी सादगी, फ़क्र व फ़ाक़ा और दुनिया से बेरग़बती का आला तरीन नमूना होती है और उनका यह फ़र्क़ ऐन अख़्तियारी होता है। ताजदारे दो आलम सरवरे कौनेन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0व0) की ज़िन्दगी पूरी इन्सानियत के लिए उस्वा–ए–हसना है। आपके ऊपर कायनात की हर चीज़ सौ जान निसार थी। सहाबा–ए–किराम (रज़ि0) आपकी चश्म व अबरू के पाबन्द थे। अहले सरवत की कुल जमा पूंजी आपके लिए वक़्फ़ थी और कैसर व किसरा के ताज आपके सामने गर्द थे। मगर आप (स0अ0व0) ने अपनी ज़िन्दगी की ऐसी सादा गुज़ारी जो पूरी इन्सानियत के लिए एक नमूना और इबरत की सबसे आला मिसाल है। आप (स0अ0व0) ने ताउम्र कभी मोटे बिस्तर पर आराम करना गवारा न किया। पेट भरकर कभी खाना न खाया और खाने में गोश्त और रोटी कभी एकसाथ जमा न हुआ। कभी–कभी तो महीनों गुज़र जाते थे मगर घर में चूल्हा जलने का मौक़ा न आया, बाज़ मर्तबा बतने मुबारक (पेट) पर दो–दो पत्थर बांधने तक की नौबत आ गयी। लेकिन आप (स0अ0व0) कभी भी ऐश की ज़िन्दगी को पसंद न किया बल्कि हमेशा आख़िरत के ऐश व आराम को तरजीह दी और उसी की अमली तौर पर तालीम दी ताकि उम्मत किसी दौर में भी माली मज़ाहिर के जाल में न फसे और अपनी आख़िरत को संवारने की फ़िक्र करे। इसका नतीजा था कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के हाथों पर बैत याफ़ता कुदसी नुफ़ूस का भी यही मिज़ाज बन गया था और उन्होंने नबी (स0अ0व0) की उन खुसूसियात को मन व अन जज़्ब कर लिया था।

एक मर्तबा रसूलुल्लाह (स0अ0व0) दोपहर के वक़्त ख़िलाफ़े मामूल घर से बाहर तश्रीफ़ लाए, थोड़ी देर में हज़रत अबूबक्र (रज़ि0) भी अपने घर से बाहर निकल आए और कुछ वक़्फ़े के बाद हज़रत उमर (रज़ि0) भी हाज़िरे ख़िदमत हुए। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने तश्रीफ़ आवरी का सबब पूछा तो पता चला कि भूख की शिद्दत घर से बाहर ले आयी है। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि इस वक़्त मुझे भी यही तक़ाज़ा है लिहाज़ा हम लोग अबू लहीश बिन तेहान अन्सारी (रज़ि0) के यहां चलते हैं, यह एक साहबे हैसियत अंसारी सहाबी थे जो ज़ाति खजूरों के बाग़ात और बकरियों वग़ैरह के मालिक थे। यह तीन लोगों की मुबारक जमाअत उनके घर पहुंची तो वह खुशी से झूम उठे और इन अज़ीम हस्तियों की ज़ियाफ़त को अपने लिए शर्फ़ व सआदत की बात समझा। बैठने के लिए ख़ास मसनद सजाई और मेवाजात के साथ ठंडा पानी पेश किया, फिर खाने के लिए एक बकरी ज़िबह की और पकाकर ख़िदमते मुबारक में खाना हाज़िर किया। सबने ख़ूब सैर होकर खाया और अल्लाह का शुक्र अदा किया। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने चलते वक़्त फ़रमाया बाग़ का ठंडा साया, पकी हुई खजूरें और ठंडा पानी, बिला शुब्हा यह वह नेमतें हैं जिनके बारे में क़यामत के रोज़ सवाल होगा। यह उन मुबारक नुफ़ूस के फ़क्र व फ़ाक़ा की ज़िन्दगी का नमूना है जिनसे अक़वामे आलम के उलझे बालों को संवरना था मगर फिर भी वह दुनियावी लज़्ज़तों से किनारा किये हुए थे और उन्हें आख़िरत की जवाबदेही का एहसास दामनेगीर था। गौर का मक़ाम है कि आज हमारे अन्दर एहतिसाबे ज़िन्दगी का जज़्बा मफ़कूद हो चुका है। क़नाअत पसंदी का जौहर अन्क़ा हो गया है। न हमें नेअमतों पर शुक्र की तौफ़ीक़ है और न मुसीबत पर सब्र की। न आख़िरत में जवाबदेही का एहसास है और न ही सुन्नते नबवी पर अमल का शौक़।

यूरोप पर
इस्लामी सभ्यता का प्रभाव

मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

यूरोप के राजनीतिक व धार्मिक उरूज का दौर वही है जिसे खुद ईसाई लेखकों ने सहमति ये "अंधकार युग" (*Dark Age*) का नाम दिया है। क्योंकि यह दौर इल्म व दानिश और सभ्यता व संस्कृति के फ़रोग़ और इस्तिहकाम का नहीं बल्कि ज्ञान व शिक्षा के विरोध और जिहालत और वहम परस्ती का दौर था। यह उलमा व मुहक़्क़िीन की सरपरस्ती और उनकी हिम्मत अफ़ज़ाई का नहीं बल्कि उनके अपमान और उनके आला अफ़कार व नज़रियात पर जाहिल पादरियों के वर्चस्व का दौर था। यह वह दौर था जब अवाम को सख़्ती के साथ शिक्षा से दूर रखा जाता था और इल्मी व फ़िक्री मैदान में मुकम्मल तक़लीद पर मजबूर किया जाता था। बाइबिल और अरस्तू व अफ़लातून जैसे क़दीम फ़लसफ़ियों के अफ़कार व नज़रियात को तमाम उलूम का सरचश्मा क़रार दिया जाता था। आज़ादाना तहक़ीक़ व जुस्तुजु और ग़ौर व फ़िक्र की क़तई इजाज़त न थी और यह पाबन्दी खुद यूनानी अहद से ही क़ायम थी। चुनान्चा यूनान के एक आलिम अरकिताश (*Archytas*) ने हिसाब के चन्द पैमाने और प्रकारें ईजाद की तो अफ़लातून ने उसे सख़्त मलामत की कि तुमने हिसाब के हुस्न को तबाह कर दिया।

(*Inveighed against them withgreat indignation and persistence as destroying' and perverting all the good there is in geometry.*)

"सख़्त नाराज़गी के साथ उसने इनको इस तरह बुरा–भला कहा कि जैसे उन्होंने ज्योमेट्री की तमाम अच्छाइयां ख़त्म कर दीं और उसको तबाह कर दिया हो।"?

कलीसा का दावा था कि खुदा ने "किताबे मुक़द्दस" (*Gosples*) में न सिर्फ़ हक़ व सिद्क़ का मेयार बयान किया है, बल्कि जिन बातों का जानना हमारे लिए ज़रूरी था वह सारी बातें इसमें दर्ज हैं। लिहाज़ा हर तरह का इल्म अनाजील और रिवायाते कलीसा में महफ़ूज़ है। इसलिए "किताबे मुक़द्दस" इन्सानी मालूमात का ऐसा मजमूआ है जिस पर इज़ाफ़ा होना ग़ैरमुमकिन है।

कलीसा के इस फ़िक्री वजूद व घमण्ड का नतीजा था कि पूरा पश्चिमी समाज अलग–अलग तरह की वहम परस्ती के चंगुल में फंस चुका था, पूरे यूरोप पर घटाटोप तारीकी छायी हुई थी और इस तारीकी में कलीसा ने हर इल्म व फ़न की बागडोर अपने हाथों में थाम रखी थी, इस दावे के साथ कि उलूम व मआरिफ़ का सरचश्मा वही है। जिसके नतीजे में तालीम व हिकमत से बेनियाज़ी, तवह्हुम परस्ती, उलमा की नाक़द्री, ऐश पसंदी, और संगीन मज़ालिम ने मिलजुल कर ऐसे हालात पैदा किए कि कलीसा के इन्तिहाई उरूज के तवील दौर में भी मसीहियत, न तो यूनानी व रोमी तहज़ीब की हिफ़ाज़त कर सकी और न दुनिया को तमद्दुन की नई राहें दिखला सकी, बल्कि आज जदीद दुनियाए यूरोप के पास तहज़ीब व तमद्दुन और इल्म व दानिश के नाम पर जो कुछ भी है, वह मसीहियत का नतीजा और उसका फ़ैज़ान नहीं बल्कि वह मसीहियत से फ़रार और कलीसा के ख़िलाफ़ बग़ावत की पैदावार और तहज़ीबे इस्लामी का सरापा फ़ैज़ है।

पश्चिम ने आम तौर से मुसलमानों के जदीद उलमा, बेमिसाल साइंसदानों और अज़ीम मुफ़क्किरों के अहदे आफ़रीं कारनामों पर पर्दा डालने की कोशिश की। उनकी ईजादात, इख़्तराआत और फ़ुतूहात पर अपने नाम की छाप लगा दी, फिर उमूमी तौर पर यही समझा जाने लगा कि हर मुसबत फ़िक्र का सरचश्मा यूरोप है और हर नये ख़्याल का ख़ालिक़ मग़्रिब है। सफ़ेद इन्सान, तरक्क़ी व खुशहाली सिर्फ़ यूरोप के लिए मुक़द्दर हुई है। मुसलमानों का कहीं दूर–दूर तक ज़िक्र नहीं, लेकिन तारीख़ी हक़ाएक़ लम्बे अर्से तक पोशीदा नहीं रह सकते, तहक़ीक़ व जुस्तुजु की फ़िक्री सलाहियतें सलीमुत्तबअ इन्सान को हक़ व सदाक़त से

रोशनास ज़रूर कराती हैं। चुनान्चे ख़ुद मग़्रिब में ऐसे ग़ैरमुतअस्सिब और हक़ीक़त पसंद अहले क़लम पैदा हुए जिनकी कोशिशों से मुस्लिम उलमा व हुक्मा के तालीफ़ी दफ़ीनों, तख़्लीक़ी कारनामों और गुमशुदा ख़ज़ानों का सुराग़ मिला और इस हक़ीक़त का एतराफ़ किया गया कि "तहरीके एहयाए उलूम व फ़ुनून" और मग़्रिब की तमामतर तरक़्क़ी मुसलमानों की ही मरहूने मिन्नत है। मुसलमानों ने तहज़ीबी सिलसिला–ए–इरतक़ा में निहायत अहम कड़ियां जोड़ दीं, उनक इल्मी व फ़न्नी फ़ुतूहात ने तारीख़ के धारे मोड़े, उन्होंने मुर्दापरस्तों, क़दामतपंसदों, औहामज़दों और ख़ौफ़ के मारों को सदियों के घटाटोप अंधेरे से बाहर निकाला, तारीक राहें रोशन कीं और जब ख़ुद ओट में हुए तो अपने चिराग़ अहले यूरोप को थमा गए। पश्चिमी लेखक राबर्ट ब्रीफ़ाल्ट (त्वइमतज ठतपनिसज) लिखता है:

(Down the fifteenth century whatever scientific activity existed in Europe was engaged in assimilating Arab learning without greatly adding to it.)

"पन्द्रहवीं सदी तक यूरोप में जितनी भी साइंसी सरगर्मी मौजूद थी वह ज़्यादातर अरबों के इल्म व फ़ज़्ल से माख़ूज़ थी और उस पर कोई ख़ास इज़ाफ़ा नहीं कर रही थी।"

(दि मेकिंग ऑफ़ ह्यूमनिटी: 202)

अलग़रज़ इस्लाम ने इल्म व फ़न के आलमगीर फ़रोग़ और आफ़ाक़ व अन्फ़स में ग़ौर व फ़िक्र की अमली दावत के साथ इल्म को एक मक़सदियत भी अता की और अपने ख़ालिक़े कायनात तक पहुंचने का ज़रिया क़रार दिया जिसके लिए इन्सान की मुतजस्सिस फ़ितरत हमेशा मुतलाशी रहती है। यह तर्ज़े फ़िक्र इन्सानी फ़िक्र व अमल की दुनिया पर एहसाने अज़ीम था जिसने इन्सानियत की क़िस्मत को बदल दिया और इन्सानी मुआशरह तहज़ीब व तमद्दुन की राह पर चलने लगा, मग़्रिबी उलमा व मुफ़क्किरीन ने भी उलूम व फ़ुनून और इन्सानी फ़िक्र व सोच पर इस्लाम और ख़ासकर क़ुरआन के इस अज़ीम एहसान का एतराफ़ किया है।

मुस्तश्रिक़ मार्गोलीथ (*G. Margoliouth*) इस्लाम के ख़िलाफ़ अपने तास्सुब के लिए मशहूर है, राडोल (*J.M. Rodwell*) के तर्जुमा–ए–क़ुरआन के मुक़द्दमे में लिखता है:

(The Koran admittedly occupies an important position among the great religious book of the world. Though the youngest of epoch making works belonging to this class of literature, it yields to hardly any in the wonderful effect which it has produced on large messes of men. It has created an all but new phase of human thought and fresh type of character.)

"दुनिया के अज़ीम मज़हबी सहीफ़ों में क़ुरआन पाक एक अहम मक़ाम रखता है, हालांकि इस क़िस्म की तारीख़साज़ तहरीरों में इसकी उम्र सबसे कम है, मगर इन्सान पर हैरतअंगेज़ असर डालने में वह किसी से पीछ नहीं, इसने एक नई इन्सानी फ़िक्र पैदा की और एक नए अख़लाक़ की बुनियाद डाली।"

इस्लाम ने इल्म के सही मक़सद की तरफ़ रहनुमाई की और उसे मुसबत, तामीरी और मुफ़ीद बनाकर पेश किया। पहले इल्म की कड़ियां बिखरी हुईं बल्कि बसाऔक़ात मुतज़ाद थीं, बाज़ उलूम एक–दूसरे से बरसर पैकार थे, हत्ता कि रियाज़ी व तिब जैसे मासूम इल्म के माहिरीन भी कभी–कभी सलबी व इल्हादी नताएज निकाला करते थे। चुनान्चे सदियों तक फ़लसफ़ा व रियाज़ियात के इमाम तस्लीम किये जाने वाले यूनान के उलमा भी या तो मुश्रिक थे या मुल्हिद थे और उनके अक़वाल और अफ़कार मज़हबी उलूम के लिए ख़तरा और मुल्हिदीन के लिए सनद और नमूना बने हुए थे। ऐसी सूरते हाल में इस्लाम का सबसे बड़ा एहसान यह था कि उसने इल्म की मुन्तशिर इकाइयों को जोड़ दिया और उनके अन्दर इस वहदत का इन्किशाफ़ किया जो तमाम वहदतों को मरबूत करती है और वह वहदत अल्लाह तआला की पहचान है:

"और वह आसमानों और ज़मीनों की पैदाइश में ग़ौर करते हैं; ऐ हमारे परवरदिगार! तूने यह बेकार नहीं पैदा किया, तू पाक है, बस दोज़ख़ के अज़ाब से हमारी हिफ़ाज़त फ़रमा।" (आले इमरान: 191)

मौजूदा हालात में हमारा तर्ज़े अमल

"जब फ़साद आम हो जाता है, फ़ित्ना फैल जाता है तो आम तौर से हम लोगों का यह मशग़ला बन जाता है कि जब चार आदमी बैठेंगे तो मौजूदा हालात की ख़राबी का, लोगों की गुमराही का, लोगों के ग़लत रास्ते पर जाने का, फ़स्क़ व फिजूर का, अस्यान का, कुफ़्र व इल्हाद का, करप्शन का, रिश्वत सतानी का, चोरी डाके का, अग़वा बराए तावान का तज़किरा इस तरह बैठकर करते हैं कि भई फ़लां जगह यह हो गया, फ़लां जगह यह हो गया, और बस ...! इससे महफ़िलें गरम होती हैं, महफ़िलों का मौजू बनता है और फिर बात वहीं पर ख़त्म हो जाती है, होता क्या है?जब इस क़िस्म के हालात होते हैं, तो हम दूसरों पर तनक़ीद करते हैं, दूसरों की बुराइयां बयान करते हैं, दूसरों के ग़लत हालात का ज़िक्र करते हैं, इससे सिवाए मायूसी के और कुछ हासिल नहीं होता। इसके बजाए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि दूसरों का मामला तो हमारे साथ है, वह जो कुछ करेंगे उसका सिला दुनिया व आख़िरत में पाएंगे, लेकिन हर शख़्स को यह जानना ज़रूरी है कि मेरे अन्दर क्या ऐब है?मेरे अन्दर क्या ख़राबी है?और अगर हर इन्सान अपने ज़ाति नक़्स और ऐब की तरफ़ मुतवज्जा हो जाए और उसकी इस्लाह की फ़िक्र कर ले तो कम से कम एक चिराग़ तो जल गया और अल्लाह तआला की सुन्नत यह है कि चिराग़ से चिराग़ जलते हैं, यानि अगर सिर्फ़ मजलिसों में बात करके बात ख़त्म हो जाए और दूसरों के ऐबों और दूसरों की ख़राबियों और उनकी बुराइयों पर बात ख़त्म हो जाए तो उससे कुछ हासिल न हुआ, होता यह है कि हम इस्लाह का अलम लेकर खड़े होते हैं तो हम सोचते हैं कि हम तो ठीक हैं, जबकि दूसरे लोग ख़राब हैं, लिहाज़ा दूसरों की इस्लाह से काम का आग़ाज़ होना चाहिए।

जब हर इन्सान अपने बारे में ग़ौर करेगा और अपनी इस्लाह करने की कोशिश करेगा, तो इसका नतीजा यह होगा कि मसलनः मैं अगर झूठ बोलता हूं तो झूठ बोलना छोड़ दूं, ग़ीबत करता हूं तो ग़ीबत करना छोड़ दूं, मैं अगर फ़राएज़ से ग़फ़लत बरतता हूं तो फ़राएज़ बजा लाना शुरू कर दूं, अगर मैं अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल हूं तो अल्लाह तबारक व तआला की याद में अपने आप को मुस्तग़रक़ कर दूं और दीन के जितने शोबे हैं, अक़ाएद, इबादात, मामलात, मुआशरत, अख़लाक़ियात, इन पांचों शोबों के अन्दर जहां–जहां मेरे अन्दर कोताही पायी जाती है, इसको मैं दुरुस्त करने की कोशिश करना शुरू कर दूं तो उससे एक चिराग़ जलेगा और एक नमूना पैदा हो जाएगा। **(इस्लाही ख़ुत्बातः 20/ 50–54)**

जस्टिस मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 9 | September 2021 | VOLUME: 13

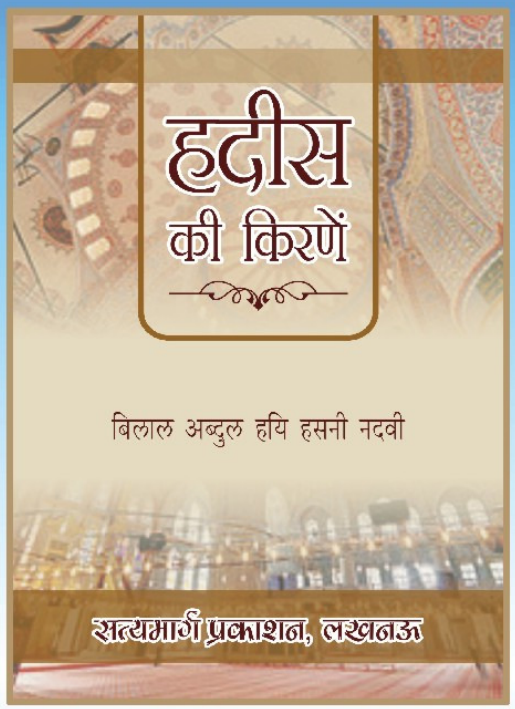

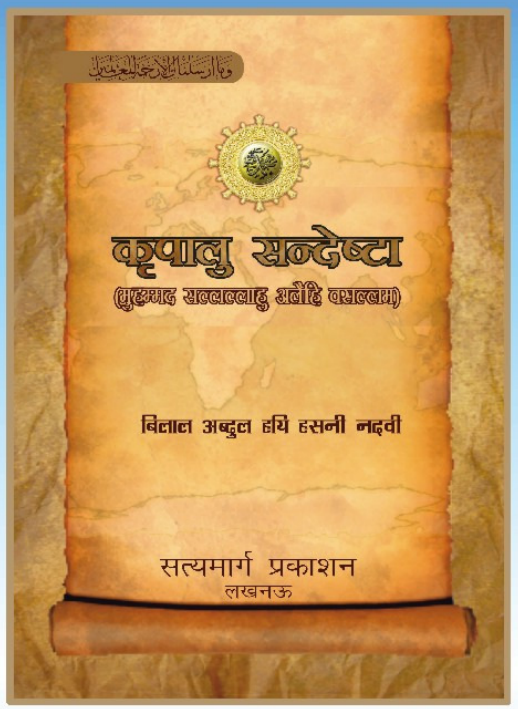

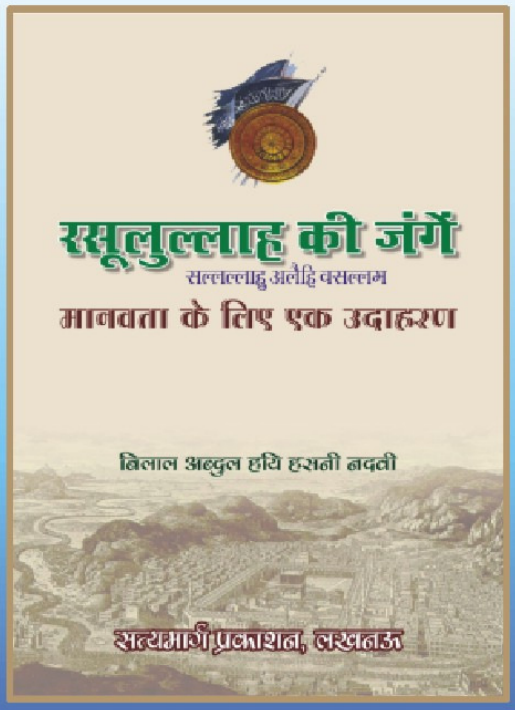

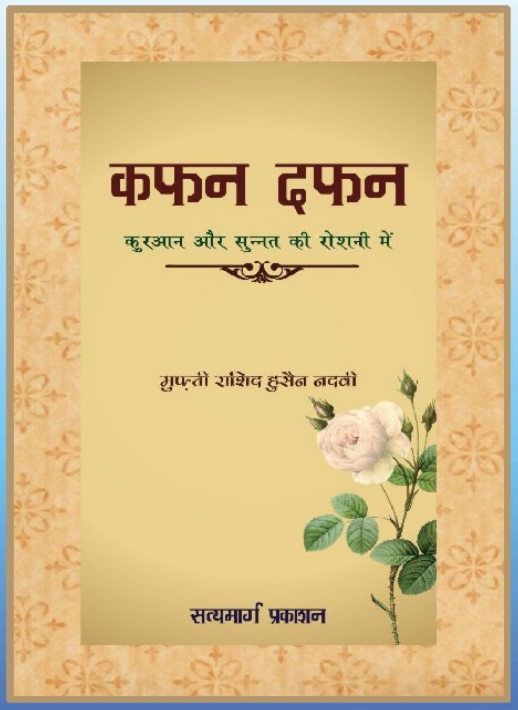

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi
MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI
Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak
Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.